Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

اَیَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ فَمَنۡ کَانَ مِنۡکُمۡ مَّرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ

(अल्बकरः : 185)

(अनुवाद) : अब गिनती के लिए कुछ ही दिन बचे हैं। अतः तुममें से जो कोई बीमार हो या यात्रा पर हो, तो उसे चाहिए कि अन्य दिनों में भी उतने ही रोज़े पूरे करे।

वर्ष- 9
अंक-11-12

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12-19 रमज़ान 1446 हिज्री कमरी, 13-20 अमान 1404 हिज्री शम्सी, 13-20 मार्च 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुदा ने जो कुछ अपनी दया और कृपा से मेरे साथ व्यवहार किया यहां तक कि इस लम्बी अवधि में प्रत्येक दिन मेरे लिए उन्नति का दिन था और प्रत्येक मुक़द्दमा जो मुझे तबाह करने के लिए उठाया गया ख़ुदा ने शत्रुओं को अपमानित किया। यदि इस अवधि और इस समर्थन और सहायता का तुम्हारे पास कोई उदाहरण है तो प्रस्तुत करो अन्यथा आयत لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا (सूरत अलहाक़्क़ः45) के अनुसार यह निशान भी सिद्ध हो गया और तुम से इसके विषय में पूछा जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वचन

ख़ुदा तआला का यह कथन है -

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِیۡلِ... لَاَخَذۡنَا مِنۡہُ بِالۡیَمِیۡنِ... ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡہُ الۡوَتِیۡنَ...

अर्थात् यदि यह नबी हम पर झूठ बांधता तो हम इसे दाएं हाथ से पकड़ लेते फिर उसकी वह धमनी काट देते जो प्राण धमनी है। यह आयत यद्यपि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उतरी है परन्तु इसके अर्थों में व्यापकता है जैसा कि सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम में भी मुहावरा है कि प्रत्यक्षतः आदेश-निषेध के सम्बोधित आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम होते हैं परन्तु उन आदेशों में दूसरे भी सम्मिलित होते हैं या वे आदेश दूसरों के लिए ही होते हैं जैसा कि यह आयत فَلَا تَقُلۡ لَّہُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡہَرۡہُمَا وَقُلۡ لَّہُمَا قَوۡلًا کَرِیۡمًا अर्थात् अपने माता-पिता को अप्रसन्नता से कोई बात मत कह और उनसे ऐसी बातें न कर जिनमें उनकी प्रतिष्ठा दृष्टिगत न हो। इस आयत के सम्बोध्य तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं परन्तु वास्तव में इस बात का सम्बोधन उम्मत की ओर है क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पिता और माता का निधन आप की अल्पायु में ही हो गया था। इस आदेश में एक रहस्य भी है और वह यह है कि इस आयत से एक बुद्धिमान समझ सकता है कि जबकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके कहा गया है कि तू अपने माता-पिता का सम्मान कर तथा प्रत्येक बोलचाल में उनके प्रतिष्ठित पद का ध्यान रख तो फिर दूसरों को अपने माता-पिता का कितना सम्मान करना चाहिए। इसी की ओर यह दूसरी आयत संकेत करती है- وَقَضٰی رَبُّکَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِیَّاہُ وَبِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا अर्थात् तेरे रब्ब ने चाहा है कि तू केवल उसी की उपासना कर तथा माता-पिता से उपकार का व्यवहार कर।

इस आयत में मूर्ति-उपासकों को जो मूर्तियों की पूजा करते हैं समझाया गया है कि मूर्तियां कुछ भी नहीं हैं और मूर्तियों का तुम पर कुछ उपकार नहीं है। उन्होंने तुम्हें पैदा नहीं किया और तुम्हारी छोटी आयु में वे तुम्हारे अभिभावक नहीं थे और यदि ख़ुदा वैध रखता कि उसके साथ किसी अन्य की भी उपासना की जाए तो यह आदेश देता कि तुम माता-पिता की भी उपासना करो क्योंकि वे भी लाक्षणिक अर्थ में रब्ब हैं और प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर यहां तक कि हिंसक पशु भी अपनी सन्तान को उनकी लघु आयु में नष्ट होने से बचाते हैं। अतः ख़ुदा के प्रतिपालन के उपरान्त उनका भी एक प्रतिपालक है तथा वह प्रतिपालन का आवेग भी ख़ुदा तआला की ओर से है।

इस मूल विषय से असंबद्ध वाक्य के पश्चात् हम पुनः अपने मूल विषय की ओर लौटते हुए कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जो कहा गया है कि यदि वह हम पर कुछ झूठ गढ़ता हो तो हम उस का वध कर देते। इस का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल ख़ुदा तआला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अपना यह स्वाभिमान प्रकट करता है कि आप यदि झूठ गढ़ने वाले होते तो आप का वध कर देता परन्तु दूसरों के लिए यह स्वाभिमान नहीं है तथा चाहे ख़ुदा पर कैसा ही झूठ बोलें तथा झूठे इल्हाम बना कर ख़ुदा की ओर सम्बद्ध कर दिया करें उनके बारे में ख़ुदा का स्वाभिमान जोश नहीं मारता। यह विचार जहां अनुचित है वहां ख़ुदा के समस्त धर्म ग्रन्थों के विपरीत भी है तथा अब तक तौरात में भी यह वाक्य मौजूद है कि जो व्यक्ति ख़ुदा पर झूठ गढ़ेगा तथा नुबुव्वत का झूठा दावा करेगा वह तबाह किया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल से इस्लाम के उलेमा आयत لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا को ईसाइयों और यहूदियों के सम्मुख आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के लिए बतौर प्रमाण प्रस्तुत करते रहे हैं। स्पष्ट है कि जब तक किसी बात में व्यापकता न हो वह प्रमाण का काम नहीं दे सकती। भला यह क्या प्रमाण हो सकता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यदि ख़ुदा पर झूठ बांधते तो तबाह किए जाते और समस्त काम बिगड़ जाता परन्तु यदि कोई अन्य झूठ बांधे तो ख़ुदा क्रोधित नहीं होता अपितु उससे प्रेम करता है और उसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अधिक छूट देता है तथा उनकी सहायता और समर्थन करता है। इसका नाम तो प्रमाण नहीं रखना चाहिए वरन् यह तो एक दावा है जो स्वयं प्रमाण का मोहताज है। खेद कि मेरी शत्रुता के लिए इन लोगों की कहां तक नौबत पहुंच गई कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के निशानों पर भी आक्रमण करने लगे। चूंकि इन लोगों को ज्ञात है कि मेरे इस वह्यी और इल्हाम के दावे पर पच्चीस वर्ष से अधिक समय हो चुका है जो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरित होने के समय से भी अधिक हैं क्योंकि वे तेईस वर्ष थे और ये तीस वर्ष के लगभग। अभी मालूम नहीं कि ख़ुदा के ज्ञान में मेरे द्वारा इस्लाम के प्रचार का समय कहां तक है। इसलिए ये लोग मौलवी कहलाने के बावजूद यह कहते हैं कि एक ख़ुदा पर झूठ गढ़ने वाला और झूठा इल्हाम का दावेदार अपने झूठ गढ़ने के प्रारंभ से तीस वर्ष तक भी जीवित रह सकता है और ख़ुदा उसकी सहायता और समर्थन कर सकता है और उसका कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते। हे दुष्ट लोगो ! झूठ बोलना और मल खाना एक समान है। ख़ुदा ने जो कुछ अपनी दया और कृपा से मेरे साथ व्यवहार किया यहां तक कि इस लम्बी अवधि में प्रत्येक दिन मेरे लिए उन्नति का दिन था और प्रत्येक मुक़द्दमा जो मुझे तबाह करने के लिए उठाया गया ख़ुदा ने शत्रुओं को अपमानित किया। यदि इस अवधि और इस समर्थन और सहायता का तुम्हारे पास कोई उदाहरण है तो प्रस्तुत करो अन्यथा आयत لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا (सूरत अलहाक़्क़ः45) के अनुसार यह निशान भी सिद्ध हो गया और तुम से इसके विषय में पूछा जाएगा।

(हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 22, पृष्ठ 213)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वचन	1
1	अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन	2
2	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 फ़रवरी 2024 ई.	3
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 फ़रवरी 2024 ई.	9
4	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम के आलोक में	15
5	जमाअत अहमदिया और खिदमत-ए खल्क (सेवा कार्य)	20

अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं, तो पूरे सिलसिला-ए-नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे के जांबाज नबी, जीवित नबी और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक ही शख्स के रूप में पहचानते हैं—वही नबियों के सरदार, रसूलों का फख्र, समस्त मुरसिलों का सर्ताज, जिनका नाम मुहम्मद मुस्तफा व अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है। जिनकी छत्रछाया में दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है, जो पहले हज़ारों वर्षों तक नहीं मिल सकती थी।

(इरशादाते आलिया सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा।

अहमदियत के केंद्र क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

129वां जलसा सालाना क़ादियान 29 ,28 ,27 दिसंबर 2024 को आयोजित हो कर बखैर ओ ख़ूबी संपन्न हुआ।

तीनों दिनों के जलसा कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग, जिससे देश और विदेश में जलसे से लाभ प्राप्त किया गया।

लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से 63,666 लोगों ने जलसे की कार्यवाही देखी और सुनी।

16,000 से अधिक आशिक़ाने अहमदियत की जलसे में शिरकत।

42 देशों से विभिन्न क़ौमों के अज़ीज़ और ख़वातीन की नुमाइंदगी।

MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) का रोशन बसीरत से भरा समापन

भाषण। समापन भाषण में इस्लामाबाद (यूके) में जमाअत के अज़ीज़ों का इज्तिमा।

कुछ अफ्रीकी देशों के जलसे और समापन भाषण में उनकी शिरकत।

नमाज़-ए-तहज्जुद।

दर्स-उल-क़ुरआन और ज़िक्र-ए-इलाही से मुनव्वर माहौल।

उलमा-ए-किराम के गहरी मालूमात से भरपूर तक़ारीर। 9 भाषाओं में कार्यक्रमों का अनुवाद।

जमाअत के लोगों की मालूमात बढ़ाने के लिए तरबियती उमूर पर आधारित डॉक्युमेंट्री और विभिन्न मालूमाती नुमाइशों का आयोजन।

निकाहों के ऐलान। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसे की कवरेज।

पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसे की समस्त कार्यवाही का मुकम्मल होना।

तीसरी किस्त का शेष ..

है अजब मेरे ख़ुदा मेरे पे एहसान तेरा
किस तरह शुक्र करूं ऐ मेरे सुल्तान तेरा

इसके बाद श्रीमान मुनीर अहमद हाफ़िज़ आबादी साहिब, सचिव, मजलिस कारपरदाज़ कादियान ने वर्ष 2024 में निधन प्राप्त सत्तर (70) मूसियों के नाम पढ़कर सुनाए, ताकि उनकी मगफिरत के लिए जमाअत के अहबाब दुआ कर सकें।

मुकर्रमी सदर-ए-इजलास, नाज़िर साहिब आला व अमीर मुकामी कादियान ने जलसा सालाना के इंतज़ाम में मदद करने वाले उच्च अधिकारियों और समस्त अहबाब का शुक्रिया अदा करने के बाद स्थानीय तौर पर इख्तितामी दुआ करवाई।

इसके पश्चात लंदन से जलसा की अंतिम तकरीब के सिलसिले में ख़ास नशरीयात की शुरुआत हुई। जलसा सालाना कादियान में शामिल होने वाले मुखलेसीन में पैदा होने वाले पाक तबदीली के हवाले से और इसी तरह पूरी दुनिया से जमाअत के अहबाब में कादियान की ज़ियारत की ख्वाहिश के हवाले से, साथ ही जलसा सालाना कादियान के रूहपरवर नजारों और कादियान के पुरकशिश मक़ामात से संबंधित एक बेहद दिलचस्प डॉक्यूमेंट्री MTA भारत की तरफ से MTA इंटरनेशनल पर प्रसारित की गई, जिसे जलसा गाह और स्टेज पर बैठे अहबाब ने बहुत ही ध्यानपूर्वक और खामोशी के साथ देखा और सुना।

सैयदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मसीह अल्-ख़ामिस (अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) की तशरीफ आवरी और फ़लक बूस नारों के साथ MTA इंटरनेशनल से जलसा सालाना कादियान 2024 की इख्तितामी तकरीब का आग़ाज़ हुआ।

इस मौके पर अफ्रीका के 8 देशों – टोगो, माली, गिनी कनाकरी, नाइजर, गिनी बिसाऊ, सेनेगल, बुर्किना फासो, अमेरिका के वेस्ट कोस्ट के जलसा सालाना भी आयोजित हो रहे थे और कादियान दारुल अमान के अलावा इन मुल्कों के भी सीधे नज़ारे बार-बार दिखाए जाते रहे।

भारतीय समय के अनुसार ठीक 4 बजे हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला) बुलंद नारों की गूंज में इवान मसरूर में तशरीफ लाए। हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने सभी शामिलीन को 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' का तोहफा पेश फ़रमाया।

तिलावत-ए-क़ुरआन करीम श्रीमान नसीम अहमद बाजवा साहिब ने की। आपने सूरह अल-अहज़ाब की आयत 39 से 49 तक की तिलावत की और उनका तर्जुमा पेश किया।

उसके बाद श्रीमान नासिर अली उस्मान साहिब ने हज़रत अकदस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) का मन्ज़ूम कलाम शीर्षक "शान-ए-इस्लाम" से चुने हुए अशआर पेश किए, जिसका पहला शेर यह है:

वो पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा
नाम उसका है मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) दिलबर मेरा यही है

ठीक 4 बजकर 20 मिनट पर हज़ूर अनवर मिंबर पर तशरीफ फ़रमाए और 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' का तोहफा देने के बाद इख्तितामी ख़िताब का

शेष पृष्ठ 23 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"ग़ज़वा-ए-खैबर के मौके पर रवाना होते समय आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:
जो लोग माल-ए-गनीमत (युद्ध में मिलने वाले धन) की नीयत से निकल रहे हैं, वे मेरे साथ न निकलें।
सिर्फ वे लोग मेरे साथ रवाना हों जो सिर्फ जिहाद में रुचि रखते हैं।
ग़ज़वा-ए-ज़ी करद के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:
आज के बेहतरीन घुड़सवार अबू कतादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) हैं और बेहतरीन पैदल सिपाही सलमा बिन अक़वा (रज़ियल्लाहो अन्हो) हैं।
नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:
ख़ुदा की नाफ़रमानी (आज्ञा उल्लंघन) में कोई नज़र (मन्नत) पूरी न की जाए,
और न ही उसमें नज़र जायज़ है जिसका बंदा मालिक नहीं।
ग़ज़वा-ए-ज़ी करद, सरिय्या हज़रत अबान बिन सईद (रज़ियल्लाहो अन्हो) की तरफ़ नज्द और ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के सिलसिले में सीरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन।
श्रीमान मुहम्मद अशरफ़ साहिब आफ़ मंडी बहाउद्दीन, श्रीमान हबीब मुहम्मद शातरी साहिब (नायब अमीर द्वितीय, केन्या)
और श्रीमान अनोबी मडिंगो साहिब आफ़ जिम्बाब्वे का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा गायब
अगर आप चाहें तो इसे देवनागरी में और अधिक सरल भाषा में भी ढाल सकता हूँ। बताइए ?

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले जुमे ग़ज़वा-ए-ज़ी करद का वर्णन हो रहा था। जैसा कि बताया गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ग़ज़वा पर रवाना होने से पहले कुछ सहाबा (रज़ियल्लाहो अन्हुम) को दुश्मन की तरफ भेजा था और फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उनके पीछे अपनी फौज लेकर रवाना हुए।

इस सिलसिले में आगे यह लिखा है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा (रज़ियल्लाहो अन्हुम) पहुंचे तो दुश्मन के लश्कर ने उन्हें देखा और भाग निकले। जब मुसलमान दुश्मन के पड़ाव वाली जगह पर पहुंचे तो वहां हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) का घोड़ा मिला जिसकी पिंडली की नसें कटी हुई थीं।

एक सहाबी ने कहा: "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अबू क़तादा के घोड़े की तो नसें कटी हुई हैं।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास खड़े हुए और दो बार फ़रमाया:

"तेरा भला हो! जंग में तेरे कितने दुश्मन हैं।"

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा (रज़ियल्लाहो अन्हुम) आगे बढ़े, यहां तक कि उस जगह पहुंचे जहां हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) और मसअदा ने लड़ाई की थी, जिसका वर्णन पिछले जुमे हुआ था।

लोगों ने समझा कि हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) चादर में लिपटे हुए पड़े हैं।

एक सहाबी ने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! लगता है कि अबू क़तादा शहीद हो गए।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"अल्लाह अबू क़तादा पर रहमत करे। उस जात की कसम जिसने मुझे इज्जत दी, अबू क़तादा तो दुश्मन के पीछे हैं और रज्ज़ (रणगीत) पढ़ रहे हैं।"

हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) वर्णन करते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लश्कर ने मेरे घोड़े को देखा जिसकी नसें कटी हुई थीं और मेरी चादर में लिपटे हुए एक मरे हुए को देखा तो उन्हें लगा कि शायद मैं शहीद हो गया हूं।

हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहो अन्हो) और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहो अन्हो) जल्दी से आगे बढ़े और चादर हटाई तो मसअदा का चेहरा देखा।

उन्होंने कहा:

"अल्लाहु अकबर! अल्लाह और उसके रसूल ने सच्च कहा। या रसूलल्लाह! यह मसअदा है।"

इस पर सभी सहाबा ने भी तकबीर कही।

फिर थोड़ी ही देर में हज़रत अबू क़तादा ऊंटनियों को हांकते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गए।

आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"ऐ अबू क़तादा! तुम्हारा चेहरा कामयाब हो गया। अबू क़तादा घुड़सवारों के सरदार हैं। ऐ अबू क़तादा! अल्लाह तुम में बरकत दे।"

एक दूसरी रिवायत में है कि आपने फ़रमाया:

"अल्लाह तुम्हारी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत दे।"

फिर आपने फ़रमाया:"अबू क़तादा! यह तुम्हारे चेहरे पर क्या हुआ?"

हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया:

"मेरे मां-बाप आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर कुर्बान हों, मुझे एक तीर लगा था। उस जात की कसम जिसने आपको इज्जत दी, मुझे लगा था कि मैंने तीर निकाल दिया था।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"अबू क़तादा, मेरे करीब आओ।"

मैं करीब आया। आपने नरमी से तीर निकाल दिया, अपने मुंह का थूक लगाया और अपने हाथ से मल दिया।

हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) कहते हैं कि उस जात की कसम जिसने आपको नबुव्वत दी, मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे कोई चोट ही न लगी हो और न ही कोई जख्म हुआ हो।

पिछली दफा वर्णन हुआ था कि तीर तो अबू क़तादा ने खुद निकाला था, लेकिन मुमकिन है कि उसकी कोई नोक या सिरा अंदर रह गया हो, जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकाला हो।

एक रिवायत में है कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अबू क़तादा को देखा तो फ़रमाया:

"ऐ अल्लाह! इसके बालों और इसकी त्वचा में बरकत दे।"

और फ़रमाया:"तुम्हारा चेहरा कामयाब हो गया।"

वे कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया:

"या रसूलल्लाह! आपका चेहरा कामयाब हो गया।"

फिर जब 70 साल की उम्र में हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहो अन्हो) की वफात हुई तब भी कहा जाता था कि उनका चेहरा 15 साल के नौजवान जैसा था।

(1993 ,दारुल कुतुब अल इल्मिया ,101-100 पृष्ठ ,5 सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग)

इस ग़ज़वा में हज़रत सलमा (रज़ियल्लाहो अन्हो) का दुश्मन से ज़ी करद में मुकाबला यूं वर्णन हुआ है।

हज़रत सलमा (रज़ियल्लाहो अन्हो) कहते हैं:

"मैं दुश्मन के पीछे दौड़ रहा था। उस जात की कसम जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इज्जत दी, मुझे अपने पीछे न तो सहाबा नजर आए और न ही उनकी गर्द।

दुश्मन सूरज डूबने से पहले एक घाटी में पहुंच गया जहां ज़ी करद नाम का एक झरना था। वे वहां से पानी पीना चाहते थे, मगर मुझे अपने पीछे देखकर हट गए।

सूरज डूब चुका था। मैंने एक आदमी को देखा और तीर मारा। सुबह भी मैंने उसे तीर मारा था। अब दूसरा तीर मारा और दोनों तीर उसे लगे।

वे दो घोड़े छोड़कर भाग निकले। मैंने दोनों घोड़े पकड़ लिए और इसी दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आ पहुंचे।

फिर मैं इन घोड़ों को लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गया।"

(1993 ,दारुल कुतुब अल इल्मिया ,99-98 पृष्ठ ,5 सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़ू क़रद पहुँचने के बारे में यूँ वर्णन हुआ है। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इशा के वक़्त पहुँचे और उस चश्मे पर पड़ाव डाला जहाँ मैंने दुश्मन को रोका था। आपने उन ऊँटनियों और हर वह चीज़ जो मैंने दुश्मन से छीनी थी अपने क़ब्जे में ले ली थी। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन ऊँटों में से एक ऊँट ज़बह किया जो दुश्मन से छीने गए थे और आंनहु सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए उसका कलेजा और कूबड़ भूना। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हु ने खजूरों से लदे हुए दस ऊँट भेजे जो आपको ज़ू क़रद मुकाम पर मिले।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि मैंने दुश्मन को पानी से रोका हुआ था और वे प्यासे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे सौ मुजाहिदीन के साथ रवाना करें, मैं उनका पीछा करके उनके हर ख़बर देने वाले को भी क़त्ल कर दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कराने लगे यहाँ तक कि आग की रौशनी में आपके दाँत दिखाई देने लगे। आपने फ़रमाया: "सलमा! क्या तुम ऐसा कर सकते हो?" मैंने कहा, "आपको इज़्ज़त देने वाले की क़सम! जी हाँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मलक्ता फ़अस्जिह" अर्थात जब तुमने उन पर क़ाबू पा लिया है तो नरमी अपनाओ। यह अरब के कहावतों में से एक कहावत है जिसका मतलब है कि सबसे बेहतरीन माफ़ी यही है कि नरमी से पेश आओ और सख़्ती न करो। अगर वे चले गए तो चले गए, अब उनका पीछा करने की ज़रूरत नहीं।

इस जंग के वाक़ियात में हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु एक वाक़िया वर्णन करते हुए कहते हैं कि सुबह के वक़्त आपने फ़रमाया:

"आज के बेहतरीन घुड़सवार अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और बेहतरीन पैदल सिपाही सलमा बिन अक़्वा हैं।"

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आपने मुझे सवार और पैदल दोनों का हिस्सा अता फ़रमाया। फिर मुझे अपनी ऊँटनी पर अपने पीछे सवार किया।

इस सफ़र में हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की एक और रिवायत मिलती है। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मदीना वापसी के वक़्त जब हम मदीना के क़रीब पहुँचे तो एक अंसारी सहाबी, जो दौड़ने में बहुत तेज़ थे, एलान करते हुए कहने लगे कि कोई है जो मुझसे दौड़ में मुकाबला करे? अर्थात मदीना मुनव्वरा तक मेरे साथ दौड़ लगाए। उन्होंने कई बार यही अल्फ़ाज़ दोहराए।

कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे ही ऊँटनी पर सवार था। मैं आपके पीछे सवार था। मैंने उस अंसारी सहाबी से कहा, "क्या तुम किसी इज़्ज़तदार की इज़्ज़त नहीं करते? तुम्हें किसी शरीफ़ आदमी का डर नहीं है जो यह एलान करते फिर रहे हो?" उसने कहा, "नहीं, सिवाय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के, मुझे किसी से डर नहीं।"

तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़किया, "या रसूलुल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों, मुझे इस आदमी से दौड़ लगाने की इजाज़त दें।" आपने फ़रमाया, "ठीक है, अगर तुम चाहते हो तो लगाओ।"

मैंने उस शख़्स से कहा, "चलो।" फिर कहते हैं कि मैंने अपने पाँव मोड़े, छलाँग मारी और दौड़ पड़ा। मैं एक या दो घाटियों तक उसके पीछे दौड़ा अर्थात वो आगे और मैं पीछे था और अपनी ताकत बचाता रहा। फिर मैंने तेज़ी की और उसे पकड़ लिया। मैंने उसके कंधे के बीच हाथ मारा और कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं तुम पर सबक़त ले गया।" वो मुस्कराने लगा और कहा, "मेरा भी यही ख़्याल था।" और यूँ मैं उस दौड़ में आगे निकल गया यहाँ तक कि हम मदीना पहुँच गए।

इस ग़ज़्वे के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना से कितना अरसा बाहर रहे, इसकी तफ़्सील में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बुध की सुबह रवाना हुए और आपने एक रात एक दिन ज़ू क़रद में क़याम फ़रमाया ताकि दुश्मन की कोई ख़बर मिल सके। फिर सोमवार के दिन मदीना वापस तशरीफ़ लाए। यूँ आप पाँच रातें मदीना से बाहर रहे।

इस जंग में शहीद होने वाले सहाबा की तफ़्सील यूँ है। मुसलमानों में से हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए। इब्न हिशाम के मुताबिक इब्न वक़्क़ास बिन मुज्जज़ भी शहीद हुए थे। इनके अलावा हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे जंग से पहले ही ऊँटों के बाड़े में शहीद कर दिए गए थे।

कुफ्फार के बारे में लिखा है कि काफिरों में से अब्दुर्रहमान बिन उययना, हुबैब बिन उययना, मसअदा बिन हकमह फज़ारी, औबार और उसका बेटा अम्र क़त्ल हुए।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी को दुश्मन क़ैद कर के ले गए थे। उसका वर्णन पहले हो चुका है। हमला करने वाले हज़रत अबू ज़र की बीवी को पकड़कर साथ ले गए थे और उन्होंने उसे बाँध कर रखा हुआ था और वे लोग अपने मवेशी अपने घरों के सामने रात को रखते थे।

एक रात वह औरत बंधनों से छूट गई और क़रीब ही बँधे हुए ऊँटों के पास आई। जब भी वह किसी ऊँट के क़रीब जाती तो वह चिल्लाता। उसे छोड़ देती, वह शोर मचाता। यहाँ तक कि अज़बा, यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह ऊँटनी थी जिसे दुश्मन लूट कर साथ ले आए थे, उसके पास पहुँची तो वह नहीं चिल्लाई। बोलती भी नहीं। बड़े आराम से रही। वह सधी हुई ऊँटनी थी। वह औरत उसकी पीठ पर सवार हो गई और उसे एड़ लगाई और वह चल पड़ी।

उन लोगों को उसके भागने का इल्म हो गया तो उन्होंने उसे पकड़ना चाहा लेकिन वह पकड़ी नहीं गई।

रावी कहते हैं कि उस औरत ने अल्लाह के लिए मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह उसे इस ऊँटनी के ज़रिए निजात देगा तो वह ज़रूर इस ऊँटनी को क़ुर्बान कर देगी। जब वह मदीना आई और लोगों ने देखा तो कहने लगे कि यह तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी "अज़्बा" है। वह औरत कहने लगी कि मैंने तो मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह इस ऊँटनी के ज़रिए मुझे बचाएगा तो मैं इसकी क़ुर्बानी कर दूँगी। इस बहस पर लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से यह सारी बात वर्णन की।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सुभानअल्लाह! इस औरत ने इस ऊँटनी को कितना बुरा बदला दिया है। यह इसे बचाकर लाई है और यह इस मन्नत में यह बदला दे रही है कि अगर अल्लाह ने इस ऊँटनी के ज़रिए इसे बचाया तो यह इसे ज़बह कर डालेगी। यह तो अच्छा बदला नहीं है।" फिर फ़रमाया:

"कोई मन्नत अल्लाह की नाफ़रमानी में पूरी न की जाए और न ही उस चीज़ में

मन्नत जाइज़ है जिसका बंदा मालिक नहीं।"

फ़रमाया: "तुम इसकी मालिक ही नहीं हो। यह मेरी ऊँटनी है। तुम अल्लाह का नाम लेकर ख़ैर व बरकत के साथ अपने घर जाओ।"

किताब-उल-नज़्र, बाब: 'ला वफ़ा लि नज़्रिन ,237-236 पृष्ठ ,8 सही मुस्लिम, भाग) ,667 सीरत इब्न हिशाम, ग़ज़वा ज़ी करद, पृष्ठ) (3085 :फ़ी मअसियतिल्लाह', हदीस दारुलकुतुब ,95 पृष्ठ ,5 दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत) (सब्लुल् हुदा व रशाद, भाग (अल-इल्मिय्या, बैरूत

अब एक सरीया का वर्णन करता हूँ, यह सरीया हज़रत अबान बिन सईद रज़ि. की सरपरस्ती में नज्द की तरफ़ भेजा गया। यह सरीया मुहर्रम सात हिजरी में हुआ। (ग़ज़वात व सराया, मोहम्मद अज़हर फ़रीद, पृष्ठ 390, फ़रीदिया पब्लिशर्स, साहीवाल)। जबकि एक रिवायत में इसकी तारीख़ जुमादा अल-थानी सात हिजरी बताई गई है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि. ने भी इस सरीया को मुहर्रम 7 हिजरी में लिखा है।

(सब्लुल् हुदा व रशाद, भाग 6, पृष्ठ 128, दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत) (उद्धृत अज़ सीरत ख़ातिमुन नबीय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि., एम.ए., पृष्ठ 837)

इस सरीया की तारीख़ मुहर्रम सात हिजरी ज़्यादा सही लगती है क्योंकि रिवायतों में वर्णन है कि ख़ैबर के लिए रवाना होने से पहले मदीना से नज्द की तरफ़ हज़रत अबान बिन सईद रज़ि. को भेजा गया और ख़ैबर के लिए रवाना होना मुहर्रम सात हिजरी में हुआ था।

(दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत ,115 पृष्ठ ,5 सब्लुल् हुदा व रशाद, भाग)

हज़रत अबान रज़ि. का तआरुफ़ यह है कि आपके वालिद क़ुरैश के बड़े सरदारों में से थे। आपके भाई अम्र और खालिद पहले मुसलमान हो गए थे और हबशा (अबीसीनिया) हिजरत करने वालों में शामिल थे। अबान ग़ज़वा-ए-बदर में मुश्रिकों की तरफ़ से शामिल हुए थे। उन्होंने सुलह-ए-हुदैबिया के दौरान हज़रत उस्मान रज़ि. को पनाह दी थी। अम्र और खालिद हबशा से वापस आए तो उन्होंने अबान को पैग़ाम भेजा यहाँ तक कि तीनों ख़ैबर के दिनों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अबान ने इस्लाम क़बूल किया। एक रिवायत में है कि हज़रत अबान बिन सईद रज़ि. ने सुलह-ए-हुदैबिया और ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के दरमियान इस्लाम क़बूल किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के वक़्त अबान बहरीन के गवर्नर थे। इसके बाद वह हज़रत अबू बकर रज़ि. के पास आए और फिर शाम चले गए। आप 13 हिजरी में शहीद हुए, और एक रिवायत के मुताबिक़ 27 हिजरी में हज़रत उस्मान रज़ि. के दौर में वफ़ात पाई।

दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, ,170-168 पृष्ठ ,1 अल्-इसाबा फी तमीज़ अस-सहाबा, भाग) (दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत ,148 पृष्ठ ,1 बैरूत) (असदुल ग़ाबा, भाग

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के लिए रवाना होने से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबान बिन सईद रज़ि. की क़ियादत में नज्द की तरफ़ एक लश्कर भेजा था। नज्द एक आधा रेगिस्तानी लेकिन सरसब्ज़ इलाक़ा है जिसमें कई वादियाँ और पहाड़ हैं। यह दक्षिण में यमन, उत्तर में सहरा-ए-शाम और इराक़ तक फैला है। इसके पश्चिम में सहरा-ए-हिजाज़ है। यह इलाक़ा समुंद्र तल से 1200 मीटर ऊँचा है। इस ऊँचाई की वजह से इसे नज्द कहते हैं। इस लश्कर का मक़सद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ैरहाज़िरी में मदीना को दुश्मन क़बीलों से महफ़ूज़ रखना था। ये क़बीले हमेशा इस फिराक़ में रहते थे कि कब मौक़ा मिले और मदीना पर हमला कर दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सहाबा के साथ मदीना से बाहर जाना मदीना पर हमले के लिए बेहतरीन मौका समझा जाता था। दुश्मन समझते थे कि अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना से बाहर हैं और लोग भी साथ हैं, लश्कर भी साथ है, मदीना में बहुत कम लोग हैं। इसलिए हम हमला करके मदीना को फतह कर लेंगे। इस ख़तरे के चलते जब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी ग़ज़वे पर जाते, तो ऐसे क़बीलों की तरफ़ कुछ सहाबा भेज दिया करते थे।

उद्धृत अज़ दायरा-ए-मआरिफ़ सीरत-ए-मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो) (बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर ,412 पृष्ठ ,8 अलैहि व सल्लम, भाग (ज़वार अकेडमी, कराची ,297 फरहंग-ए-सीरत, पृष्ठ)

यह सरीया का वर्णन सही बुख़ारी में इस तरह आया है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अबान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को एक सरीया पर मुक़र्रर कर के मदीना से नज्द की तरफ भेजा। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि फिर अबान और उनके साथी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ख़ैबर में आए, बाद इसके कि आपने उसे फतेह कर लिया था। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते थे कि ये ख़ैबर की फतेह के बाद पहुँचे थे। मैंने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! इन्हें इसमें हिस्सा मत दीजिए, ख़ैबर के माल-ए-ग़नीमत में इनका कोई हिस्सा नहीं होना चाहिए।" जिस पर दोनों के बीच कुछ बहस हो गई। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "ऐ अबान! बैठ जाओ।" और आपने उन्हें हिस्सा नहीं दिया क्योंकि ये सीधे तौर पर ख़ैबर की जंग में शामिल नहीं थे। यही वजह हो सकती है।

(सही बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर, हदीस: 4238, 4239) (सुबुल अल-हुदा व रशाद, भाग 6, सफ़ा 128, दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बेरुत)

फिर एक ग़ज़वे का वर्णन तारीख में मिलता है जो बहुत मशहूर है। यह ग़ज़वा-ए-ख़ैबर कहलाता है। ख़ैबर एक वसीअ (विशाल) हरा-भरा इलाका है जो चश्मों और बेशुमार पानी से शादाब है और जज़ीरा-ए-अरब में खजूरों के सबसे बड़े बागों में शुमार किया जाता है। इसकी ज़रख़ेज़ी का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि ख़ैबर की सिर्फ एक वादी, जो कतीबा के नाम से मशहूर है, उसमें चालीस हज़ार खजूरों के दरख़्त थे। ख़ैबर की वादी मदीना से उत्तर दिशा में तक़रीबन छियानवे मील की दूरी पर थी। यहाँ यहूद बहुत पुराने वक़्त से आबाद थे। तारीखी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने से यहाँ बनी इस्राईल के यहूद आबाद थे। कुछ इतिहासकारों के मुताबिक़ बुख़्त-नसर के दौर में यहूद यहाँ आकर बसे। कुछ और रिवायतें भी हैं जिनसे यही साबित होता है कि ख़ैबर में बहुत पुराने वक़्त से यहूद आबाद थे और बड़े-बड़े क़िले बनाकर यहाँ रहते थे। इनके लिए इस जगह की बड़ी अहमियत थी और अब भी कहते हैं कि है। इब्रानी भाषा में ख़ैबर का मतलब भी क़िला होता है। यहूद के कुछ क़बीले मदीना में भी बसे हुए थे, लेकिन ख़ैबर के यहूद की एक बात अलग थी कि यहाँ के यहूद बाकी सभी यहूद से ज्यादा बहादुरी और जंग में हिम्मत दिखाने में आगे थे और उनमें आपसी इत्तेहाद (एकता) भी दूसरों की तुलना में ज्यादा था। इसी वजह से यह इलाका अरब में ताकतवर क़ौम समझा जाता था।

(उद्धृत: सीरत एनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 328-331, दारुस्सलाम) (तबाक़ातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 81, दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बेरुत) (फरहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 66, जवार अकेडमी, कराची)

मदीना के यहूद हों या ख़ैबर के यहूद, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और इस्लाम के खिलाफ उनकी साजिशें और चालबाज़ियाँ बग़ावत की हद तक बढ़ चुकी थीं। दुश्मनी में आगे बढ़ती इस क़ौम ने इस्लाम और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुबारक ज़ात को खत्म करने में अपनी समस्त ताकतें लगा दी थीं, जबकि इसके बरअक्स, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मदीना के यहूद के साथ हमेशा नरमी का बर्ताव किया। उनके साथ सुलह के मुआहिदे किए और जब भी वे मुआहिदे तोड़ते या ख़िलाफ़वर्ज़ी करते, तो आपकी पहली कोशिश माफ़ करना और दरगुज़र करना होती थी। यहाँ तक कि उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने की भी कई बार कोशिश की। मुआहिदे की खिलाफ़वर्जी करते हुए बाहरी ताक़तों को मदीना पर हमला करने में मदद की। जब सजा दी भी गई, तो वह बिल्कुल इंसाफ के मुताबिक होती थी। मगर रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की रहमत और माफ करने का ये आलम था कि फिर भी उनकी जान व माल को अमान दी गई और मदीना से इस तरह निकाल दिया गया कि जो चाहो साथ ले जाओ।

अगर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का मक़सद जब्र व ज़ुल्म होता, तो मदीना के यहूद की बार-बार की बेवफाई पर कभी माफ न करते। अगर आपका

मक़सद ख़ून बहाना होता, तो बनू क़ैनुक़ा और बनू नज़ीर को कभी अमान देकर मदीना से जाने न देते। अगर आपका मक़सद माल व दौलत हासिल करना होता, तो बनू नज़ीर (जो अरब का सबसे बड़ा सरमायादार गिरोह समझा जाता था) कभी अपना सोना-चांदी भरकर मदीना से न ले जा सकते।

जो हुस्न-ए-सुलूक, एहसान और दरगुज़र का मुआमला रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मदीना के यहूद के साथ किया था, असल में तो ये होना चाहिए था कि ख़ैबर जाकर ये लोग अमन व सुकून से रहते और इस्लाम से सुलह का रवैया अपनाते। लेकिन मदीना से निकाले गए यहूद की एक तादाद ख़ैबर में बस गई, और पहले से ताक़तवर ख़ैबर अब मुसलमानों के खिलाफ खतरनाक साजिशों का मरकज़ बन गया।

यही ख़ैबर के यहूद थे जो एक बड़ा वफ़्द लेकर मक्का पहुंचे और वहां के काफिरों को मुसलमानों के खिलाफ उकसाया। फिर इधर-उधर के कबीले मिलाकर 15 हज़ार का बड़ा लश्कर तैयार करके मदीना पर हमला कर दिया, जिसे तारीख में ग़ज़वा-ए-अहज़ाब या जंग-ए-ख़ंदक कहा जाता है। पहले इसका वर्णन हो चुका है।

कोई शक नहीं कि अगर इस्लाम के साथ अल्लाह की खास मदद न होती, तो मुसलमानों का नाम-ओ-निशान मिट सकता था। इस खतरनाक साजिश के असल सरगना ख़ैबर के यहूद ही थे, जो अब हर वक्त मुसलमानों को खत्म करने में लगे थे।

यह सब देखते हुए अब ज़रूरी था कि इस अहेदशिकनी और साजिश करने वाली क़ौम के खिलाफ कोई सीधा कदम उठाया जाए ताकि इलाक़े का अमन बरकरार रह सके और हर शख्स अपने मजहब पर अमन से अमल कर सके।

मशहूर मुस्तशरिक मोंटगोमरी वाट, जो इस्लाम और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के खिलाफ जहर उगलने से बाज़ नहीं आता, वह भी अपनी किताब में लिखता है: "ख़ैबर पर हमला करने की सीधी वजह यही थी कि उन्होंने अपनी दौलत का बेहिसाब इस्तेमाल कर के अपने पड़ोसी अरबों को मुसलमानों के खिलाफ हथियार उठाने पर उकसाया।"

Muhammad Prophet and Statesman by W. Montgomery Watt,)
(189 :Pg

यह वह विशेष पृष्ठभूमि थी जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदाई इशारों के तहत यह फ़ैसला किया कि ख़ैबर की ओर कूच किया जाए। अल्लामा इब्न साद ने लिखा है कि ग़ज़वा-ए-ख़ैबर जुमादा अल-उला 7 हिजरी में हुआ।

(दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत ,81 पृष्ठ ,2 ,तबक़ातुल कुबरा)

जबकि इब्न उक़बा और अल्लामा इब्न इस्हाक़ के अनुसार, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ुल-हिज्जा में हुदैबिया से मदीना वापस तशरीफ़ लाए, तो आप मदीना में लगभग बीस रातें रहे। फिर आप ख़ैबर की ओर तशरीफ़ ले गए और यह मुहर्रम का महीना था।

(सुब्लुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 115, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी सीरत ख़ातमुन-नबीयीन में जो नोट्स लिखे हैं, उनमें आपने इस ग़ज़वा-ए-ख़ैबर को मुहर्रम और सफ़र 7 हिजरी का ग़ज़वा क़रार दिया है।

(उद्धृत सीरत ख़ातमुन-नबीयीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम.ए., पृष्ठ 837)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुदैबिया से वापस आने के क़रीब पाँच महीने बाद यह फ़ैसला किया कि यहूदी, जो ख़ैबर में रहते थे और जो मदीना से सिर्फ़ कुछ मंज़िलों की दूरी पर था, वहाँ से मदीना के ख़िलाफ़ आसानी से साज़िश कर सकते थे, उन्हें वहाँ से निकाल दिया जाए।

इसलिए, आपने सोलह सौ (1600) सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ अगस्त 628 ईस्वी में ख़ैबर की ओर कूच फ़रमाया।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 325)

कुछ इतिहासकारों ने सुल्ह-ए-हुदैबिया के पाँच महीने बाद इसकी तारीख़ वर्णन की है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन में यही वर्णन फ़रमाया है।

हालाँकि, अधिकतर इतिहासकार और मुहद्दिसीन इस घटना को सुल्ह-ए-हुदैबिया के चंद दिनों बाद, मुहर्रम के महीने में मानते हैं और हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यही लिखा है। वल्लाहु अअलम।

सुल्ह-ए-हुदैबिया - एक बड़ी जीत मूल रूप से सुल्ह-ए-हुदैबिया एक बहुत बड़ी जीत थी। क़ुरआन करीम ने इसे "फ़त्हे अज़ीम" (महान विजय) कहा है, जैसा कि फ़रमाया:

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا (अल-फ़तह: 2)

"निश्चित रूप से हमने तुम्हें स्पष्ट विजय प्रदान की।"

यह वही दरवाज़ा था जिससे गुज़रते हुए ख़ैबर और मक्का जैसी शानदार फ़तूहात (विजयों) की बशारत (ख़ुशख़बरी) मिली। वास्तव में, अल्लाह तआला ने सुल्ह-ए-हुदैबिया के समय ही ख़ैबर की फ़तह का वादा फ़रमा दिया था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सुल्ह-ए-हुदैबिया से लौट रहे थे, तो मक्का और मदीना के बीच सूरतुल फ़तह नाज़िल हुई।

इस सूरत में फ़त्ह-ए-ख़ैबर की खुशखबरी इस तरह दी गई:

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۙ وَّمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَّأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهِ ۔

(सूरतुल फ़तह: 19-21)

"अल्लाह मोमिनों से उस समय पूरी तरह राज़ी हो गया, जब वे पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअत कर रहे थे। उसने उनके दिलों की सच्चाई जान ली, सो उसने उनके दिलों पर सुकून उतारा और उन्हें एक क़रीबी फ़तह (ख़ैबर की विजय) दी और बहुत से ग़नीमत के माल भी प्रदान किए।"

लश्कर की तैयारी और मदीना पर नायब (उत्तरी अधिकारी) की नियुक्ति जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर की ओर जाने का एलान किया, तो फ़रमाया कि सिर्फ़ वही लोग शामिल हो सकते हैं जो सुल्ह-ए-हुदैबिया में शामिल थे। एक रिवायत के मुताबिक़, आपने फ़रमाया:

"जो लोग सिर्फ़ ग़नीमत के माल के लिए निकल रहे हैं, वे मेरे साथ न आएं। सिर्फ़ वे लोग चलें जो सिर्फ़ जिहाद की नीयत रखते हैं।"

(सुब्लुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 115)

इब्न हिशाम के मुताबिक़, नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत नुमैलह बिन अब्दुल्लाह लैथी को मदीना का नायब (उत्तरी अधिकारी) मुक़र्रर किया। जबकि इमाम बुख़ारी के मुताबिक़, आपने हज़रत सिबाअ बिन उर्फ़ुताह को नायब बनाया।

(सुब्लुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 115, तारीख़ुस सगीर, इमाम बुख़ारी, पृष्ठ 43)

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में झंडे (पर्चम) का ज़िक्र

अल्लामा इब्न इस्हाक़ और इब्न साद वर्णन करते हैं कि सबसे पहली बार ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में 'परचम' (बड़ा झंडा) लहराया गया। इससे पहले सिर्फ़ छोटे झंडे हुआ करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु, और हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को परचम अता फ़रमाया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का परचम काले रंग का था, जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की चादर से बनाया गया था।

इसका नाम 'उक़ाब' था और यह हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था।

(255 पृष्ठ ,3 शरह ज़रकानी, भाग ,52 पृष्ठ ,3 सिरतुल हल्बीया, भाग)

सहाबियात की शिरकत एक रिवायत के अनुसार छह-सात सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हु इस जंग में शरीक हुईं, जबकि दूसरी रिवायत में बीस सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन आता है।

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में महिलाओं की भागीदारी हज़रत उम-ए-सिनान असलमिया रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करती हैं कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने ग़ज़वा-ए-ख़ैबर का इरादा किया, तो मैं आपकी खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! अगर आप अनुमति दें, तो मैं भी आपके साथ चलूँ। मैं मश्कीज़ों (पानी के मश्क) की सिलाई करूँगी, लश्कर के सामान की हिफ़ाज़त करूँगी, और अगर कोई बीमार या ज़ख़्मी हुआ तो उसका इलाज करूँगी।"

नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मुझे इजाज़त दे दी। इसी तरह, बनू ग़िफ़ार क़बीले की कुछ महिलाएँ भी हाज़िर हुईं और उन्होंने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! हम भी जंग में शरीक होना चाहती हैं। हम ज़ख़्मियों की देखभाल करेंगी और अपनी क्षमता के अनुसार मुजाहिदीन की मदद करेंगी।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें भी अनुमति दी और उनके लिए बरकत की दुआ की।

(संदर्भ: दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह, भाग 8, पृष्ठ 371, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर) (सुनन् अबू दाऊद, किताब अल-जिहाद, हदीस 2729) (इमताअल-असमा, भाग 1, पृष्ठ 321, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

मदीना के यहूदियों की प्रतिक्रिया जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की तैयारी की ख़बर मदीना के यहूदियों को हुई, तो यह उनके लिए बहुत भारी गुज़री। उन्होंने समझ लिया कि अगर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ख़ैबर में दाख़िल हो गए, तो ख़ैबर का वही हाल होगा जो पहले बनू क़ैनुक़ा, बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा का हुआ था।

(दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत ,115 पृष्ठ ,5 सबलुल् हुदा वल रिशाद ,भाग)

मदीना के यहूदी संपन्न थे, और आर्थिक रूप से कमज़ोर मुसलमान उनसे क़र्ज़ लिया करते थे। जब ख़ैबर के यहूदियों को ख़तरा महसूस हुआ, तो मदीना के यहूदियों ने मुसलमानों को तंग करने और जंग से रोकने के लिए फ़ौरन अपने क़र्ज़ की वसूली शुरू कर दी।

(नफ़ीस अकेडमी, कराची ,67 फतह ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ)

एक सहाबी का वाक़्या हज़रत इब्ने अबी हदरद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक यहूदी अबू शह्म से पाँच दिरहम (या एक रिवायत के मुताबिक़ चार दिरहम) उधार लिए थे। यहूदी ने उनसे तुरंत भुगतान की माँग की। हज़रत इब्ने अबी हदरद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "मुझे मोहलत दो, मैं ख़ैबर से वापस आकर तुम्हारा क़र्ज़ चुका दूँगा, क्योंकि अल्लाह ने अपने नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से वादा किया है कि ख़ैबर हमें ग़नीमत में मिलेगा।"

इस पर अबू शह्म यहूदी ने हसद और दुश्मनी में कहा, "क्या तुम समझते हो कि ख़ैबर वालों से लड़ना आम बदुओं से लड़ने जैसा है? तौरात की क़सम! वहाँ दस हज़ार जंगजू मौजूद हैं।"

दोनों ने यह मामला रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में पेश किया। यहूदी जज़्बाती होकर यहूदी क़ौम की हिमायत कर रहा था और मुस्लिम सेना का मज़ाक़ उड़ा रहा था। हालाँकि, नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सब्र और इंसाफ़ का बेहतरीन नमूना पेश किया और फ़रमाया, "इस यहूदी का हक़ अदा कर दो।" हज़रत इब्ने अबी हदरद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "या रसूलुल्लाह! इस वक़्त मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "जैसे भी हो, इसका हक़ अदा करो।"

इब्ने अबी हदरद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पगड़ी उतारकर उसे तहबंद बनाया और अपनी चादर बाज़ार में बेचकर यहूदी का क़र्ज़ चुका दिया। फिर बाद में उन्हें ग़नीमत में एक औरत मिली, जो उसी यहूदी अबू शह्म की रिश्तेदार थी। उन्होंने उस औरत को उसी यहूदी के पास बेच दिया।

(बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर ,374-373 पृष्ठ ,8 दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह, भाग)

(नफ़ीस अकेडमी, कराची ,68 फतह ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ)

मदीना के यहूदियों की जासूसी और ख़ैबर की रणनीति मदीना के यहूदियों ने न सिर्फ़ मुसलमानों से अदावत और तास्सुब दिखाया, बल्कि उन्होंने अशजाअ क़बीले के एक बद्दू को जासूस के तौर पर किराए पर भेजकर मुसलमानों की जंग की तैयारियों की जानकारी ख़ैबर के यहूदियों तक पहुँचा दी।

इसके अलावा, मदीना के मुसीबतज़दा मुनाफ़िक़ों (कपटियों) ने भी इस मौक़े का फ़ायदा उठाया। मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने ख़ैबर के यहूदियों को एक ख़त भेजा, जिसमें लिखा था: "मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तुम पर हमला करने आ रहे हैं। अपनी हिफ़ाज़त का इंतज़ाम करो। अपने माल-दौलत को क़िलों के अंदर जमा करो और मैदान में उतरकर उनसे जंग करो। उनकी क़ौम बहुत थोड़ी है और उनके पास बहुत कम हथियार हैं।"

(नफ़ीस अकेडमी, कराची ,72-69 सिरतुल-हल्बिया, फतह ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ)

जब यह ख़बर ख़ैबर के यहूदियों तक पहुँची, तो उनके रहनुमाओं की मीटिंग हुई, जिसमें जंग की रणनीति पर मशविरा हुआ।

एक ग्रुप का कहना था कि यहूदी अपने क़िलों के अंदर बंद रहें और फसीलों के पीछे से लड़ाई करें।

मशहूरयहूदीयोद्धामरहबकेभाईअबूज़ैनबनेकहाकिखुलेमैदानमेंलड़ाईकीजाए। एक तीसरी राय ख़ैबर के सेनापति सलाम बिन मिश्कम की थी कि मुसलमानों पर ख़ुद ही हमला कर दिया जाए।

ख़ैबर के सरदार किनाना बिन अबी अल-हुक़ैक़ ने इस राय का विरोध किया और कहा कि "मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कभी हमारी तरफ़ आने की हिम्मत नहीं करेंगे।"

आख़िर में फ़ैसला हुआ कि आसपास के क़बीलों से फ़ौजी मदद माँगी जाए।

(नफ़ीस अकेडमी, कराची ,77-75 फतह ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ)

बहरहाल, इसकी और अधिक विस्तृत जानकारी इंशाअल्लाह आगेवर्णन करूंगा।

इस समय मैं कुछ दिवंगत व्यक्तियों का उल्लेख करना चाहता हूँ। पहला उल्लेख श्रीमान मुहम्मद अशरफ साहब पुत्र श्रीमान मुहम्मद बख़्श साहब, मंडी बहाउद्दीन का है, जो पिछले दिनों अल्लाह की मर्जी से स्वर्ग सिधार गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके तीन बेटियाँ और छह बेटे हैं। उनके एक बेटे, काशिफ जावेद साहब, इन दिनों सेनेगल में हैं और वहाँ क़ायम मक़ाम मिशनरी इंचार्ज तथा अमीर जमाअत भी हैं। इसी वजह से वे अपने पिता के जनाज़े में सेनेगल से शामिल नहीं हो सके।

उनके यही बेटे, जो मुरब्बी (धार्मिक शिक्षक) हैं, लिखते हैं कि मेरे पिता अत्यंत सरल स्वभाव, नेकदिल और अल्लाह से डरने वाले व्यक्ति थे। वे अहमदियत और खिलाफत से अत्यधिक प्रेम करने वाले थे। अपने परिवार में अकेले अहमदी थे और अक्सर यही कहा करते थे कि जो कुछ हमने पाया, वह अहमदियत की वजह से ही पाया। अपनी संतान को भी यही नसीहत करते थे कि हमेशा अहमदियत और खिलाफत से जुड़े रहना। उनका कहना था कि उनके दादा मुहम्मद आज़म साहब ने 1968 के करीब सरगोधा के एक गाँव भाबड़ा में बैअत की थी और उसी समय उनके पिता भी अहमदी हो गए थे।

मुरब्बी साहब लिखते हैं कि उनकी माँ की ओर से वे अकेले भाई थे, जो अहमदी हुए। मैट्रिक के बाद उन्होंने गाँव छोड़कर मंडी बहाउद्दीन में शाहताज शुगर मिल में नौकरी कर ली और अंत तक वहीं रहे। बड़ी उम्र में उन्होंने शौक़ से क़ुरआन शरीफ पढ़ना सीखा और फिर इतनी मेहनत और प्रेम से पढ़ा कि हर महीने एक-दो बार पूरा क़ुरआन ख़त्म कर लेते थे। रमज़ान में तो दो-तीन बार क़ुरआन मुकम्मल कर लेते थे। वे गरीबों की विशेष रूप से मदद करते थे और जो भी उनके पास आता, उसे कभी खाली हाथ नहीं लौटाते थे। मुरब्बी साहब कहते हैं कि वे मुझसे भी कहते थे कि जो कुछ अल्लाह तआला हमें दे रहा है, वह तुम्हारे वक़्फ़ (समर्पण) की बरकत से है।

एक और बेटे, मुबशिर जावेद साहब, कहते हैं कि मैं पिछले कई वर्षों से सचिव माल (वित्त सचिव) हूँ और मेरे पिता हमेशा चंदों की अदायगी में नियमित थे। जब भी उन्हें पेंशन मिलती थी, तो उनकी कोशिश होती थी कि पूरे साल का चंदा एक साथ अदा कर दें। अपनी मृत्यु के समय भी उन्हें इसी बात की चिंता थी कि उनके चंदे पूरे हुए हैं या नहीं, और इस पर वे मृत्यु के समय बेहद शुक्रगुजार थे कि अल्लाह ने उन्हें अपने सभी चंदे अदा करने की तौफ़ीक़ दी। अल्लाह तआला उनसे मग़फिरत और रहमत का

सुलूक फरमाए और सभी परिजनों को सब्र और सुकून प्रदान करे।

दूसरा उल्लेख हबीब मुहम्मद शातरी साहब, नायब अमीर द्वितीय, केन्या, का है, जो मुहम्मद हबीब शातरी साहब के बेटे थे। वे अरबी मूल के थे और हाल ही में 56 वर्ष की आयु में निधन कर गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वे मोसी (वसीयत करने वाले) थे। उनके परिवार में माता-पिता के अलावा पत्नी और तीन बच्चे हैं।

कीन्या के अमीर जमाअत, नासिर महमूद ताहिर साहब, कहते हैं कि उनके पूर्वज यमन से थे और उनके पिता, हबीब शातरी साहब, ने अगस्त 1982 में बैअत की थी। वे अत्यंत ईमानदार और समर्पित अहमदी थे। यह मरहूम उनके बड़े बेटे थे। पिता की बैअत के कुछ समय बाद उन्होंने भी बैअत कर ली और जीवन के अंतिम क्षण तक अपने बैअत के संकल्प को निभाया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मोंबासा में प्राप्त की। वे एक बहुत योग्य और मेधावी छात्र थे। स्कूल की ओर से कुछ समय के लिए उन्हें फ्रांस भी शिक्षा के लिए भेजा गया था।

वे हमेशा खलीफाओं से अपनी मुलाकातों को अपने जीवन के सबसे बेहतरीन क्षणों में गिनते थे। वे चौथे खलीफा रहमहुल्लाह तआला से भी मिले थे और मुझसे भी मिले थे। वे विभिन्न तरीकों से सेवा करने की तौफीक़ पाते रहे। मृत्यु के समय वे नेशनल सेक्रेटरी शिक्षा और नायब अमीर द्वितीय कीन्या के रूप में सेवाएँ दे रहे थे।

अमीर साहब लिखते हैं कि मैं उन्हें बीस साल से जानता हूँ। वे वक़्फे-ज़िन्दगी करने वालों का बहुत सम्मान करते थे और जो भी काम उनके ज़िम्मे होता, उसे बहुत संजीदगी से करते थे। उन्हें कभी याद दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वे नियमित रूप से नमाज़ पढ़ने वाले, अल्लाह के आदेशों और सीमाओं का पालन करने वाले, चंदा देने में नियमित, उत्कृष्ट नैतिकता वाले, गरीबों की सहायता करने वाले, माता-पिता की सेवा करने वाले, छोटे बहन-भाइयों का ख्याल रखने वाले, बुद्धिमान, ईमानदार और वफादार इंसान थे।

वे बड़ी-बड़ी कंपनियों में उच्च पदों पर कार्यरत रहे। अल्लाह ने उन्हें आर्थिक संपन्नता भी प्रदान की थी। वे सामाजिक, राजनीतिक और सरकारी हस्तियों के संपर्क में रहते थे, लेकिन कभी अपनी अहमदियत को नहीं छुपाया बल्कि खुलकर इसका इज़हार करते और तबलीग भी किया करते थे। यही कारण था कि उनके जनाज़े में मोंबासा की बड़ी सरकारी, व्यावसायिक, राजनीतिक और सामाजिक हस्तियाँ बड़ी संख्या में शामिल हुईं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फिरत और रहमत का सुलूक फरमाए और उनके परिवार को धैर्य और शक्ति प्रदान करे।

तीसरा उल्लेख मकरम अनूबी मडेंगू (Anubi Madengu) साहब का है, जो ज़िम्बाब्वे की एक जमाअत के अध्यक्ष थे। वे हाल ही में स्वर्ग सिधार गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके बेटे, यूसुफ़ अनूबी साहब, जो ज़िम्बाब्वे के जमाअत के अध्यक्ष हैं, लिखते हैं कि उनके पिता प्रारंभ में सुन्नी मुसलमान थे और जमाअत अहमदिया का विरोध किया करते थे, लेकिन उनके दिल में इस्लाम के लिए प्रेम था। वे पहले मलावी में थे, जहाँ बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। बाद में वे ज़िम्बाब्वे चले गए और वहाँ उन्होंने लोगों को इकट्ठा किया और उनके क्षेत्र में नमाज़ की व्यवस्था की। उनके दिल में यह तड़प थी कि वे सच्चे मुसलमान बनें।

बाद में जमाअत अहमदिया से उनका संपर्क हुआ। वहाँ के मुरब्बी समीउल्लाह साहब से उनकी विस्तृत चर्चाएँ होती रहीं और अंततः उन्होंने अहमदियत को स्वीकार कर लिया। वे अपने क्षेत्र के पहले अहमदी थे और अहमदियत स्वीकार करने के बाद विरोध और कठिनाइयों का सामना किया। जिन लोगों को उन्होंने इकट्ठा किया था, वे भी उन्हें छोड़कर चले गए।

उन्होंने अपने निजी संसाधनों से ज़मीन खरीदी, जिस पर अब ज़िम्बाब्वे की पहली अहमदिया मस्जिद का निर्माण हो रहा है। वे चाहते थे कि यह मस्जिद उनके जीवन में पूरी हो जाए, लेकिन अब यह निर्माणाधीन है। वे बहुत ईमानदार, स्पष्टवादी और सच्चे व्यक्ति थे। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फिरत और रहमत का सुलूक फरमाए और उनकी आने वाली पीढ़ियों को धार्मिक मूल्यों पर कायम रखे।

(6-2 पृष्ठ ,2025 फ़रवरी 21 ,अल्-फज़ल इंटरनेशनल)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)

में वर्ष 2025-2026 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्निहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician। Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुक़मान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

ख़ुत्बः जुमअः

एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने बताया कि इस शहर (ख़ैबर) की फ़तह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों मुक़द्दर है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुबह के समय यह ऐलान किया कि मैं इस्लाम का काला झंडा आज उसके हाथ में दूँगा, जिसे अल्लाह और उसका रसूल तथा मुसलमान प्यार करते हैं।

अल्लाह तआला ने इस क़िला की फ़तह उसके हाथों मुक़द्दर की है। इसके बाद अगली सुबह आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और झंडा उन्हें सौंप दिया...

हालाँकि यहूदी क़िला-बंद थे, लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा को उस दिन ऐसी ताक़त बख़्शी कि शाम से पहले ही क़िला फ़तह हो गया। (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

"दुश्मन से आमना-सामना होने की तमन्ना मत करो। अल्लाह तआला से सलामती की दुआ माँगो। तुम नहीं जानते कि तुम्हें किस आज़माइश में डाल दिया जाएगा। जब तुम दुश्मन के सामने आओ तो यह दुआ करो..."

اَللّٰھُمَّ أَنْتَ رَبُّنَا وَرَبُّھُمْ وَنَوَاصِيْنَا وَنَوَاصِيْھِمْ بِيَدِكَ وَاِنَّمَا تَقْتُلُھُمْ أَنْتَ۔

"ऐ अल्लाह! तू हमारा रब है और उनका भी रब है। उनकी पेशानियाँ और हमारी पेशानियाँ तेरे हाथ में हैं। तू ही उन्हें हलाक करेगा।"

(ग़ज़वा-ए-ख़ैबर से पहले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ुत्बा)

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के संदर्भ में सीरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वर्णन

फ़िलिस्तीनियों के लिए ख़ास तौर पर और पूरी मुस्लिम दुनिया के लिए आम तौर पर दुआओं की अपील।

पाकिस्तान और बांग्लादेश के अहमदियों के लिए भी ख़ास दुआ की तहरीक।

अरब देशों को अब भी अपनी आँखें खोलनी चाहिए और एकता क़ायम करने की कोशिश करनी चाहिए।

इसके बिना कोई रास्ता नहीं, वरना सिर्फ़ फ़िलिस्तीन ही नहीं, बल्कि बाक़ी अरब देशों को भी सख़्त मुश्किलात का सामना करना पड़ेगा।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 फ़रवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْھَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْھَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْھِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْھِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर का वर्णन हो रहा था। आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ख़ैबर की ओर रवाना होने का विवरण इस प्रकार है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सरपरस्ती में 1600 जान निछावर करने वालों का लश्कर मदीना से रवाना हुआ। इसमें दो सौ घुड़सवार शामिल थे। लेकिन रवाना होने से पहले हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने एक ख़बर लेने वाला दस्ता आगे भेजा, जिसका काम था कि लश्कर के आगे-आगे रास्तों की निगरानी करता रहे और हालात की जानकारी रखे। इस दस्ते के कायद हज़रत अब्बाद बिन बिश्र अंसारी (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे।

ख़ैबर के रास्तों से परिचित होने के लिए दो मार्गदर्शक (गाइड) 20 साअ (लगभग 50 किलो) खजूर की मजदूरी पर रखे गए। इनके नाम हसील बिन ख़ारिजा अशजई और अब्दुल्लाह बिन नुऐम बताए जाते हैं, और ये दोनों अशजअ क़बीले से संबंध रखते थे।

मदीना से ख़ैबर की तरफ़ जाते हुए विभिन्न स्थानों पर पड़ाव करते हुए "सहबा" नामक स्थान पर ठहराव किया। यहाँ नमाज़ का समय हुआ, तो वहीं नमाज़ अदा की गई। बुखारी की रिवायत में है कि सहबा में आपने (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अस्र की नमाज़ अदा की। इसके बाद आपने खाने के लिए कुछ मंगवाया, लेकिन लश्कर के पास केवल सत्तू ही थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और सहाबा ने वही खाए।

रावी वर्णन करते हैं कि फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मगरिब की नमाज़ के लिए खड़े हो गए और कुल्ली की, हमने भी कुल्ली की, फिर नमाज़ अदा की, मगर वुज़ू ताज़ा नहीं किया। सहबा और ख़ैबर के बीच 12 मील का फासला था।

सफर के दौरान कुछ ऐसे वाकये भी पेश आए जिनसे पता चलता है कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मुश्किल हालात में भी सहाबा की तर्बियत का कितना खयाल रखते थे और अनुशासन, आज्ञापालन जैसी आदतों की ओर ध्यान दिलाते रहते थे।

ऐसा ही एक वाकया वर्णन हुआ है कि एक रात लश्कर के आगे-आगे कोई चमकती हुई चीज़ चलती दिखी। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को फिक्र हुई। पता करने पर मालूम हुआ कि इस्लामी लश्कर का एक सिपाही था, जो सबको छोड़कर सबसे आगे-आगे जा रहा था और उसके सिर की टोपी चांदी की वजह से चमक रही थी। उसका नाम अबू अब्स (रज़ियल्लाहु अन्हु) था।

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "उसे मेरे पास लाओ।" हज़रत अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मुझे डर हुआ कि कहीं मेरे बारे में कोई वह्य (ईश्वरीय आदेश) ना आ गया हो, शायद मुझसे कोई गलती हो गई हो। वह डरते-डरते हाज़िर हुए।

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पूछा, "क्यों लश्कर को छोड़कर आगे-आगे जा रहे थे?"

उन्होंने अपनी मजबूरी पेश की। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने नसीहत करते हुए फ़रमाया, "लश्कर के साथ-साथ चलना चाहिए।" इसके बाद उनसे बातें करने लगे।

यह उन ग़रीब सहाबा में से एक थे, जिनके पास इस जंग में आने के लिए कोई सामान नहीं था। ये हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! मेरे पास कोई सामान नहीं है, और घर में भी खाने-पीने का इंतज़ाम नहीं।"

इस पर नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपनी एक चादर उन्हें अता फ़रमाई।

वे उस चादर को बाज़ार ले गए, बताया कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम) ने दी है, और उसे आठ दिरहम में बेच दिया।

दो दिरहम से घर का खर्च लिया, दो दिरहम से सफर का सामान लिया, और चार दिरहम की एक चादर खरीद ली और फिर लश्कर में शामिल हो गए।

बातचीत के दौरान आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पूछा, "वो चादर कहाँ है जो मैंने दी थी?"

उन्होंने अर्ज़ किया, "वो तो मैंने बेच दी थी।" फिर पूरी कहानी वर्णन की।

अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु की बात सुनकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मुस्कुराए और फ़रमाया:

"ऐ अबू अब्स! इस वक्त तुम लोग बहुत तंगहाली में हो। मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम ज़िंदा रहे और लंबी उम्र पाई, तो जल्द ही देखोगे कि तुम्हारे पास बहुत सा सामान होगा, तुम्हारे घर वालों के लिए बहुत रोज़ी होगी, दिरहम-दिनार की भरमार होगी, गुलामों की भी बहुतायत होगी, लेकिन यह सब तुम्हारे लिए बेहतर नहीं होगा।"

हज़रत अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस भविष्यवाणी को अपनी आंखों से पूरा होते देखा और कहा करते थे, "अल्लाह की क़सम! सब कुछ बिल्कुल उसी तरह हुआ जैसा आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया था।"

अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु का असली नाम अब्दुल उज़्ज़ा था, जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने बदलकर अब्दुर्रहमान रखा था। उन्होंने 70 साल की उम्र पाई और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई। उनकी जनाज़े की नमाज़ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई और जन्नतुल बक़ी में दफन किया गया।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने बनी ग़तफान की ओर सुलह का पैग़ाम भी भेजा।

जैसा कि वर्णन हो चुका है, ख़ैबर की ओर बढ़ते हुए सहबा नामक स्थान पर पड़ाव किया और वहीं अस्र, मगरिब और ईशा की नमाज़ अदा की। यह जगह ख़ैबर से 12 मील दूर थी।

नमाज़ों के बाद आपने दोनों गाइड को बुलाया और अपना युद्ध योजना बताते हुए फ़रमाया, "मैं इस तरह ख़ैबर पर हमला करना चाहता हूं कि एक तरफ़ तो अहले-ख़ैबर और मुल्क-ए-शाम के बीच रुकावट बन जाऊं ताकि वे भागकर शाम न जा सकें, और साथ ही बनी ग़तफान के रास्ते को भी रोकूं ताकि वे यहूदियों की मदद को न आ सकें।"

हसील नामी गाइड लश्कर को चलाने लगा और एक ऐसी जगह पहुंचकर रुका जहाँ से कई रास्ते ख़ैबर की घाटी तक जाते थे। जब आपने रास्तों के नाम पूछे, तो उसने हज़न, शाश, हातिब जैसे नाम बताए, जिनके अर्थ कठिनाई और दुख दर्शाते थे।

एक नाम "मरहब" बताया, जिसका अर्थ प्रसन्नता और विस्तार था। तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह की रहनुमाई से शुभ संकेत मानते हुए उसी "मरहब" नामक रास्ते का चुनाव किया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह खबर मिल चुकी थी कि बनू ग़तफ़ान ने यहूदियों की सहायता करने का वादा किया है और अब वे लगभग चार हजार का एक लश्कर लेकर इस इरादे से रवाना हो चुके हैं कि इस्लामी सेना के ख़ैबर पहुँचने से पहले ही रास्ते में उन पर हमला कर दें। बनू ग़तफ़ान ने अपने प्रसिद्ध योद्धा सरदारों, तुलैहा बिन खुवैलद और उयैना बिन हिस्न की नेतृत्व में लगभग एक हजार की सेना पहले ही ख़ैबर भेज दी थी, जो यहूदियों के किलों तक पहुँच चुकी थी। अब यह चार हजार की सेना इस्लामी सेना को रोकने और अपने विचार में उसका अंत करने के लिए रास्ते में थी।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बनू ग़तफ़ान से संपर्क किया और उन्हें एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था कि वे (बनू ग़तफ़ान) ख़ैबर की लड़ाई में तटस्थ रहें और यह अल्लाह का मुझसे वादा है कि वह मुझे ख़ैबर पर विजय देगा।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी संदेश भेजा कि यदि वे यहूदियों का साथ छोड़ दें और इस्लाम कबूल कर लें, तो ख़ैबर की विजय के बाद यह क्षेत्र उन्हें दे दिया जाएगा। कुछ के मत में आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लाम कबूल करने की शर्त नहीं रखी थी, बल्कि यह कहा था कि अगर वे केवल यहूदियों की सहायता न करें और तटस्थ रहें, तो ख़ैबर की सालाना पैदावार का आधा हिस्सा उन्हें दिया जाएगा।

लेकिन सोलह सौ मुसलमानों के मुक़ाबले पंद्रह हजार योद्धाओं की सेना और मज़बूत किलों का घमंड उनके सिर चढ़ा हुआ था, जिसके कारण उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।

इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ज़रज कबीले के सरदार और उनके सच्चे साथी हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़तफ़ान के सेनापति उयैना बिन हिस्न के पास भेजा। यह वही उयैना था जो ग़तफ़ान की उस एक हजार की सेना का नेतृत्व कर रहा था, जो इस समय ख़ैबर में यहूदी सरदार मरहब के किले में मौजूद थी।

जब उयैना को पता चला कि हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रतिनिधि के तौर पर आए हैं, तो वह उन्हें किले के भीतर लाने के इरादे से आगे बढ़ा, लेकिन मरहब ने आपत्ति जताई कि मुसलमानों के इस प्रतिनिधि को किले के अंदर नहीं लाना चाहिए, कहीं वह अंदर के रास्ते और सुरंगें न देख ले।

उयैना का कहना था कि मैं चाहता हूँ कि मुसलमानों के प्रतिनिधि को अंदर लाऊँ, ताकि वे हमारी शक्ति और तैयारियों के बेहतरीन हथियार और सैन्य साजो-सामान देख लें। लेकिन मरहब नहीं माना, जिस पर उयैना ने हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से किले के बाहर मुलाकात की।

हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उयैना को नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का संदेश दिया कि अल्लाह ने हमें ख़ैबर पर विजय का वादा दिया है, इसलिए तुम यहाँ से वापस लौट जाओ और युद्ध से दूर रहो। ख़ैबर पर विजय के बाद उसकी साल भर की खजूरें भी तुम्हें दे दी जाएंगी।

इस पर उयैना ने हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि हम अपने सहयोगियों को किसी हाल में नहीं छोड़ेंगे और हम जानते हैं कि तुम लोगों की ताकत क्या है। यह यहूदी मजबूत किलों वाले हैं, उनके जवान ज्यादा हैं और हथियार भी अधिक हैं। अगर तुमने मुकाबला किया तो तुम सभी मारे जाओगे। ये क़ुरैश जैसे लोग नहीं हैं, जिन पर तुमने फतेह पाई थी। साथ ही कहा कि मेरा यह संदेश मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचा देना।

हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस घमंडी जवाब पर उयैना से कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जरूर तेरे इस किले में आएंगे, और जिस पेशकश को आज हम तुम्हें दे रहे हैं, उसी को फिर तुम मांगोगे, लेकिन तब तुम्हें तलवार के सिवा कुछ नहीं मिलेगा, अर्थात युद्ध ही होगा।

और ऐ उयैना! मैंने देखा है कि हम मदीना के यहूदियों के आंगन में भी उतरे थे और वे बुरी तरह तबाह हो गए थे।

यह कहकर हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु वापस लौट आए और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पूरी बात रखी। साथ ही बड़े प्रेम और ईमानदारी से अर्ज़ किया:

"या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अल्लाह ने जो वादा आपसे किया है, वह जरूर पूरा करेगा और अपने दीन को गालिब करेगा। इस बदु (उयैना) को उस समय एक खजूर भी न दीजिए। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अगर तलवारों ने इन्हें घेर लिया तो ये यहूदियों को छोड़कर अपने इलाके की ओर ऐसे भागेंगे जैसे पहले खंदक के दिन भागे थे।"

युद्धे खंदक के मौके पर भी यह कबीला छह हजार की सेना लेकर क़ुरैश की मदद को आया था और फिर वहां से भाग गया था।

खुदाई रौब और ग़तफ़ानियों के भागने का भी जिक्र मिलता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था:

"नुसिरतु बिर्रुअ्ब" – मुझे रौब (दुश्मनों में डर डालकर) से मदद दी गई है।

यह वाक़िआ यहाँ एक बार फिर ग़तफ़ानी सेना के लिए पेश आया।

जैसा कि जिक्र हुआ, बनू ग़तफ़ान का चार हजार का लश्कर इस्लामी सेना पर हमला करने के लिए पीछा कर रहा था, ताकि मुसलमानों को ख़ैबर पहुँचने से रोका जा सके। लेकिन अल्लाह की कोई विशेष तदबीर हुई कि ग़तफ़ान का यह लश्कर अचानक वापस लौट गया और अपने घरों की ओर रवाना हो गया।

इतिहास और सीरत की किताबों में लिखा है कि ग़तफ़ानियों के सेनापति ने अपने पीछे से एक जोरदार आवाज़ सुनी। कोई चेतावनी देने वाला पुकार कर कह रहा था कि मुसलमानों की फौज ने पीछे से उनके घरों और माल-मवेशियों पर हमला कर

दिया है, और वे उनके सामान, औरतों और बच्चों को क़ैद करने वाले हैं।

इस पर वे तुरंत वापस लौट गए और यहूदियों की मदद न कर सके।

यह अल्लाह की तरफ से ग़ैबी मदद थी। अल्लाह की आवाज़ थी।

(दारुस्सलाम ,348 ,346 पृष्ठ ,8 सीरत एनसाइक्लोपीडिया, खंड) (दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत ,245 पृष्ठ ,3 शरह जरकानी, खंड) (नफीस अकेडमी, कराची ,91-90 ,76 फत्ह-ए-खैबर, बशमील द्वारा, पृष्ठ) दायरा मआरिफ-ए-सीरत-ए-मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि) (बज़्म-ए-इकबाल, लाहौर ,379 से 378 ,376 पृष्ठ ,8 व सल्लम, खंड सहीह अल-बुखारी, किताब अल-वुज़ू, बाब: "जिसने सवीक) (209 से कुल्ला किया और वुज़ू नहीं किया", हदीस संख्या (दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत ,56 पृष्ठ ,10 इमताअ अल-अस्मा, खंड) (दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत ,428 पृष्ठ ,3 असद अल-ग़ाबा, खंड) (अनुवादित ,135 पृष्ठ ,2 किताब अल-मग़ाज़ी, वाक़दी द्वारा, खंड)

इतिहास की किताबों में ग़तफान की फ़ौज की संख्या के बारे में मतभेद पाया जाता है। जैसा कि पहले एक किताब के हवाले से बताया गया है कि बनू ग़तफान में से एक हज़ार युद्धरत सैनिक अपने सरदार उयैना बिन हसन के नेतृत्व में यहूदियों की मदद के लिए उनके किलों में पहुँच गए थे, जबकि अन्य सीरत की किताबों में उनकी संख्या एक हज़ार के बजाय चार हज़ार बताई गई है।

(किताब अल-मगाज़ी वाक़दी, भाग 2, पृष्ठ 135, अनुवादित) (सीरत एनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 357, दारुस्सलाम)

इसी तरह, कुछ सीरत की किताबों में लिखा है कि उयैना के नेतृत्व में बनू ग़तफान की चार हज़ार लोगों की फौज जब खैबर की तरफ आ रही थी, तो रास्ते में ही हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्रतिनिधि से उयैना की बातचीत हुई और अल्लाह के खौफ़ की वजह से यह चार हज़ार लोगों का दल वापस अपने इलाके की ओर लौट गया।

(सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ 694, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत) (शरह ज़रकानी, भाग 3, पृष्ठ 252, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत)

सीरत इब्न हिशाम में इस तरह लिखा है- खैर, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर की ओर अपना सफर जारी रखा और शाम के अंधेरे में जब खैबर के किले दिखाई दिए, तो आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "ठहर जाओ।" सब रुक गए, फिर आपने दुआ की:

اللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الْأَرَضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ، وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا أَذْرَيْنَ، فَإِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرِ أَهْلِهَا وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا، أَقْدِمُوا بِسْمِ اللّٰهِ।

(अनुवाद:)

"ऐ सातों आसमानों के पालनहार और उनके साये के नीचे जो कुछ है, उनके रब! सातों ज़मीनों के रब और जो कुछ उन्होंने उठाया है, उसके रब! शैतानों के रब और जिनको उन्होंने गुमराह किया है, उनके रब! हवाओं के रब और जो कुछ वे उड़ाती हैं, उसके रब! ऐ अल्लाह! हम इस बस्ती की भलाई और इसके रहने वालों की भलाई तुझसे मांगते हैं और इसके बुरे और जो कुछ इसमें है, उसके बुरे से तेरी पनाह चाहते हैं।"

फिर आपने फ़रमाया: "अल्लाह के नाम के साथ आगे बढ़ो।"

(सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 118, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत)

फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) चले यहाँ तक कि मंज़िला पहुँचे। यह खैबर का बाजार था। यह बाजार जंग के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आया था। आपने रात का कुछ हिस्सा मंज़िला में गुजारा। यहूदियों को यह गुमान नहीं था कि आप उन पर हमला करेंगे, क्योंकि उन्हें अपने किलों, हथियारों और संख्या पर घमंड था। जब यहूदियों को पता चला कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनकी ओर आ रहे हैं, तो हर दिन दस हज़ार योद्धा बाहर निकलकर देखते और कहते कि क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हम पर हमला करेंगे? यह असंभव है।

जब आप उनके पास पहुँचे, तो उन्हें खबर भी न हुई, यहाँ तक कि सूरज निकल आया। आप रात को पहुँचे थे। जब सुबह यहूदी अपने किलों से बाहर निकले, तो उनके हाथों में कुदालें और टोकरियाँ थीं। वे अपने काम के लिए निकले थे। जब उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को देखा, तो भागकर अपने किलों में छुप गए।

(दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत ,119-118 पृष्ठ ,5 ,सबलुल् -हुदा वल् रिशाद)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खैबर में रात के वक़्त पहुँचे। जब भी आप किसी क़ौम के पास रात को पहुँचते, तो सुबह होने तक हमला न करते। जब सुबह हुई, तो यहूदी अपनी कुदालें और टोकरियाँ लेकर निकले। जब उन्होंने आपको देखा, तो बोले: "अल्लाह की कसम!

मुहम्मद और उनकी फ़ौज।"रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

خَرِبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ।

(अनुवाद:) "खैबर बर्बाद हो गया। जब हम किसी क़ौम के आंगन में उतरते हैं, तो डराए जाने वालों की सुबह बहुत बुरी होती है।"

(सही अल-बुखारी, किताब अल-मगाज़ी, बाब ग़ज़वा खैबर, हदीस 4197)

मंज़िला में स्थाई पड़ाव नहीं रखा गया। इस्लामी फौज का पड़ाव बदला गया। इस बारे में जिक्र आता है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खैबर पहुँचे, मंज़िला में रात गुजारी और सुबह की। हज़रत हुबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और अर्ज किया: "या रसूलुल्लाह! अगर यह ठिकाना अल्लाह का हुक्म है, तो हम कुछ नहीं कहते। अगर आपकी राय है, तो हम मशविरा देना चाहते हैं।" आपने फ़रमाया: "यह मेरी राय है।"

हुबाब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: "यह जगह ठीक नहीं है। दुश्मन ऊँचाई पर हैं, उनके तीर दूर तक जाते हैं, हम रात के हमले से भी महफ़ूज नहीं हैं।" फिर आपने फ़रमाया: "तुमने अच्छी राय दी। आज जंग यहीं होगी, लेकिन इसके बाद हम जगह बदलेंगे।"

फिर आपने मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर कहा: "किलों से दूर जगह तलाश करो।"

मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु चलते-चलते रजीअ के स्थान पर पहुंचे, जो खैबर और ग़तफ़ानी क़बीलों के बीच स्थित था। फिर वे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास लौटकर अर्ज़ करने लगे: "या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! मैंने आपके लिए एक जगह देख ली है।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला की बरकत के साथ चलो।"

लेकिन इससे पहले ही आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) फ़रमा चुके थे कि "आज तो जंग इसी जगह पर होगी।"

इसलिए शाम को जंग खत्म होने के बाद पूरा इस्लामी लश्कर उस नई जगह पर जा पहुँचा।

(दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बैरूत ,231 पृष्ठ ,9 उमताअ अल-इसमाअ, भाग) (दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बैरूत ,119 पृष्ठ ,5 सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, भाग) जाविया पब्लिशर्स, ,130 पृष्ठ ,सबलुल् -हुदा वल् रिशाद (अनुवादित), भाग5) दारुल् कुतुब ,694 लाहौर) (अल-सीरतु अल-नबविय्या लि इब्न हिशाम, पृष्ठ (अल्इल्मिय्या, बैरूत

खैबर के विभिन्न क़िलों का बंटवारा खैबर के क़िलों के बंटवारे का वर्णन करना ज़रूरी है क्योंकि यह जंग क़िलों से ही संबंधित थी, जो एक के बाद एक फतह होते गए।

ना सिर्फ़ इन क़िलों की तादाद को लेकर मतभेद है, बल्कि इनके नामों में भी अंतर पाया जाता है। इसके अलावा, जंग के कुछ घटनाक्रम को कुछ किताबों में कुछ क़िलों से जोड़ा गया है, जबकि दूसरी किताबों में इन्हीं घटनाओं को अन्य क़िलों से जोड़ा गया है।

खैबर के भौगोलिक बंटवारे के अनुसार इसके क़िलों का उल्लेख इस प्रकार है: तारीख़-ए-याकूबी में खैबर के क़िलों की संख्या छह बताई गई है और उसमें क़िला नाइम का वर्णन नहीं किया गया, जबकि ज़्यादातर सीरत की किताबों में खैबर की जंग की शुरुआत इसी क़िले से बताई गई है।

ज़रक़ानी में क़िलों की संख्या दस बताई गई है।

अगर सभी किताबों का अध्ययन किया जाए, तो कहा जा सकता है कि खैबर का इलाक़ा तीन हिस्सों में बंटा हुआ था: तीनों हिस्सों में कुल आठ क़िले थे:

नताअ में तीन क़िले थे: नाइम, सअब और क़िला ज़ुबैर।

इस क़िले का मूल नाम क़ुल्ला था, जो बाद में हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आ गया और इसलिए यह क़िला क़िला-ए-ज़ुबैर के नाम से मशहूर हो गया।

शक़ में दो क़िले थे: उबय और बरी (या कुछ किताबों में नज़ार)।

कतीबा में तीन क़िले थे: क़मूस, वतीह और सुलालिम।

(दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बैरूत,266-264 पृष्ठ,3 शरह अल्लामा अल-ज़रक़ानी, भाग)

(163-162 ग़ज़वातु-अल-नबी, अबुल कलाम आज़ाद, पृष्ठ)

(दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बैरूत ,81 पृष्ठ ,2 तबक़ात इब्न सअद, भाग)

ख़ैबर की जंग का विवरण जंग शुरू होने से पहले रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को एक संक्षिप्त भाषण में नसीहत करते हुए फ़रमाया:

"दुश्मन से मुकाबला होने की तमन्ना मत करो। अल्लाह तआला से आफ़ियत (सलामती) माँगो। तुम्हें नहीं पता कि किस आज़माइश (परीक्षा) में डाल दिए जाओगे। जब दुश्मन का सामना हो, तो यह दुआ पढ़ो:"

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبُّنَا وَرَبُّهُمْ وَنَوَاصِيْنَا وَنَوَاصِيْهِمْ بِيَدِكَ وَإِنَّمَا تَقْتُلُهُمْ أَنْتَ

"ऐ अल्लाह! तू हमारा और उनका रब है। हमारी और उनकी पेशानियाँ तेरे हाथ में हैं। तू ही उन्हें हलाक करेगा।"

(दारुल् कुतुब अल्इल्मिय्या, बैरूत ,120-119 पृष्ठ ,5 सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, भाग)

इसके बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जंग का हुक्म दिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को सब्र (धैर्य) की तलकीन की।

सबसे पहले नाअिम क़िले का घेरा डाला गया। यह यहूदियों का सबसे मजबूत क़िला था।

इस दिन बहुत कड़ी जंग हुई, और अहले-नताअ (नाअिम के यहूदी रक्षक) ने पूरी ताकत से मुकाबला किया।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इस दिन दो ज़िरह (कवच) और खुद (हेलमेट) पहने हुए थे और ज़रिब नामी घोड़े पर सवार थे।

दुश्मन लगातार तीर चला रहा था, जबकि मुसलमान सावधानी से तीर चला रहे थे, क्योंकि तीरों की कमी थी।

हज़रत महमूद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत इस जंग में हज़रत महमूद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का वर्णन मिलता है।

वे गर्मी और थकावट के कारण क़िला नाअिम की दीवार के साये में बैठ गए।

यहूदी सरदार मरहब ने उन्हें देख लिया और उन पर चक्की का पाट गिरा दिया। कुछ रिवायतों में आता है कि यह किनाना बिन रबीअ ने फेंका था। वह चक्की उनके सिर पर लगी, जिससे उनकी खोपड़ी कटकर चेहरे पर आ गिरी। उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास लाया गया। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उनकी खाल वापस रखकर पट्टी बांध दी, लेकिन जख्म गहरा था और वे कुछ दिनों के भीतर शहीद हो गए।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उनके भाई हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु को तसल्ली देते हुए फ़रमाया:

"तुम्हारे भाई का क़ातिल जल्द अपने अंजाम को पहुँच जाएगा।"

इस पहले दिन मुसलमानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। किलों से की गई तीरاندाजी में पचास मुसलमान घायल हो गए। जब शाम हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रजीअ की ओर तशरीफ ले गए और सहाबा को भी वहां आने का हुक्म दिया। यह वही जगह थी जो हज़रत हुबाब रज़ियल्लाहु अन्हो की सलाह पर तय हुई थी और अब यही जगह मुसलमानों का केंद्रीय स्थान बन गई थी। जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है कि यह किला यहूदियों का सबसे मजबूत किला था और ख़ैबर का सबसे बहादुर और मशहूर योद्धा मरहब इसके बचाव की कमान संभाले हुए था। उसकी मदद करने वाले ऐसे घुड़सवार थे जो हिम्मत और बहादुरी में उससे कम नहीं थे, और वे उसके दोनों भाई यासिर और हारिस थे।

रिवायतों से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लगातार दस दिनों तक इस जंग में मशगूल रहे। आप हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ लेकर निकलते और पड़ाव में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को निगरानी की जिम्मेदारी सौंप जाते। जब शाम होती तो आप उसी जगह लौट आते और घायल मुसलमानों को भी वहीं लाया जाता, जहां उनके जख्मों की मरहम-पट्टी की जाती।

(सिरतुल हल्बिया, भाग 3, पृष्ठ 51-50, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

(किताबुल मग़ाज़ी, भाग 2, पृष्ठ 121, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

(सिरत इनसाइक्लोपीडिया, भाग 8, पृष्ठ 361, दारुस्सलाम)

(दायरा मआरिफ़ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 8, पृष्ठ 390 ,388, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)(फरहंगे सिरत, पृष्ठ 183, ज़वार अकैडमी, कराची)

इस जंग के वाक़िआत में मरहब की मबारज़त (द्वंद्व युद्ध) और हज़रत आमिर बिन अक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का भी वर्णन आता है। इसकी तफ़्सील कुछ इस तरह है कि इन्हीं दिनों में एक दिन मरहब, जो इस किले का यहूदी सेनापति था और बहादुरी व जुर्रत में बेमिसाल था, किले से बाहर आया और मुसलमानों को ललकारने लगा। उसने घमंड और अकड़ के साथ अपनी तलवार लहराते हुए यह शेर पढ़ा:

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّيْ مَرْحَبُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ
إِذَا الْحُرُوبُ أَقْبَلَتْ تَلَهَّبُ

(ख़ैबर जानता है कि मैं मरहब हूँ,हथियारों से लैस, बहादुर और तजुर्बेकार, जब जंग की आग भड़कती है तो मैं आगे बढ़ता हूँ।)

मरहब का यह चैलेंज सुनकर हज़रत आमिर बिन अक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हो लश्कर से निकलकर आगे बढ़े और जवाब में यह शेर पढ़ा:

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّيْ عَامِرُ
شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُغَامِرُ

(ख़ैबर का चप्पा-चप्पा जानता है कि मैं आमिर हूँ,
हथियारबंद, बहादुर और हर जंग के लिए तैयार।)

इसके बाद दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने आ गए और वार-पलटवार का सिलसिला शुरू हो गया। मरहब ने तलवार से वार किया जिसे हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी ढाल पर रोका और फौरन नीचे झुककर जवाबी वार किया। लेकिन उनकी तलवार छोटी थी, जिससे उनका वार मरहब को लगने के बजाय खुद उन्हीं पर लग गया। इस गहरे जख्म की वजह से वे शहीद हो गए। यह इस जंग के दूसरे शहीद थे। दोनों को एक ही कब्र में, अर्थात रजीअ के मुकाम पर दफन किया गया।

(दायरा मआरिफ़ सिरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 8, पृष्ठ 389-388, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर)

हज़रत सलमा बिन अक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब मेरे चाचा हज़रत आमिर बिन अक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने ही हाथों शहीद हो गए तो कुछ सहाबा कहने लगे कि आमिर के आमाल (अमल) बेकार हो गए। इस पर हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो रोते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और पूछा: "या रसूलुल्लाह! क्या आमिर के अमल ज़ाया हो गए?"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: "यह किसने कहा?" मैंने कहा: "आपके कुछ सहाबा ने।"

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"كَذَبَ مَنْ قَالَهُ، إِنَّ لَهُ لَأَجْرَيْنِ -وَجَمَعَ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ- إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ، قَلَّ عَرَبِيٌّ مَشَى بِهَا مِثْلَهُ"

(जिसने यह कहा, उसने झूठ कहा। आमिर के लिए दोहरा अज्र (सवाब) है।)

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दो उंगलियों को मिलाकर इशारा किया कि उसे दो अज्र मिलेंगे और फ़रमाया: "वह बड़ा ही जिहाद करने वाला था, उसके जैसा कोई दूसरा अरबी बहुत कम हुआ है जिसने इस धरती पर क़दम रखा हो।"

एक रिवायत में यह भी है कि "जिसने इस धरती पर क़दम रखा हो" की जगह "जिसने इस सरज़मीन पर जन्म लिया हो" के अल्फ़ाज़ हैं। अर्थात आमिर जैसा कोई और अरबी पैदा नहीं हुआ। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "उसने तो दोहरा अज्र पाया, जो यह कहता है कि उसे अज्र नहीं मिला, वह गलत कहता है।"

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्व-ए-ख़ैबर, हदीस 4196)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) स्थान रजीअ में ही क़याम फ़र्मा रहे और वहीं से क़िला नाइम को फ़तह करने के लिए लगातार दस दिन तक सहाबा-ए-

किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को भेजा जाता रहा। इस बार-बार की नाकामी, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ख्मी होने और दो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत से यहूदियों के हौसले और बढ़ रहे थे।

आख़िर एक रात आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया:

"कल मैं उस व्यक्ति के हाथ में झंडा दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला फतह अता फ़रमाएगा। वह अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत करता है।"

बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमने वह रात बड़ी खुशी में गुज़ारी कि कल फ़तह हो जाएगी, और लोगों ने यह सोचते-सोचते रात गुज़ारी कि कल झंडा किसे दिया जाएगा।

फिर जब सुबह हुई तो सारे लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए। हर शख़्स यह उम्मीद और तमन्ना कर रहा था कि झंडा उसे दिया जाए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं: "मैंने उस दिन से पहले कभी भी अमारत (नेतृत्व) को पसंद नहीं किया था।"

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "हम में से किसी को भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किसी रुतबे को हासिल करने की तमन्ना नहीं हुई थी, मगर आज हर व्यक्ति यह तमन्ना कर रहा था कि उसे यह झंडा मिले।

यहाँ तक कि मैं भी अपनी एड़ियों को ऊँचा किया और सिर को बुलंद किया कि शायद मुझे झंडा दे दिया जाए।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पीछे रह गए थे।

सफ़र-ए-ख़ैबर के दौरान बीमारी की वजह से साथ नहीं आए थे, लेकिन बाद में बेचैन होकर चल पड़े, क्योंकि उनकी आँखों में शदीद दर्द था और इससे कुछ दिखाई नहीं देता था।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैबर के लिए रवाना हुए, तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा कि "मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पीछे रह जाऊँ, यह कैसे हो सकता है?"

वे पीछे-पीछे चल पड़े, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आ मिले।

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब सुबह हुई, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुबह की नमाज़ पढ़ी। फिर झंडा मंगवाया और खड़े हो गए और लोगों को नसीहत दी। फिर फ़रमाया: "अली कहाँ हैं?" सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि "अली की आँखों में तकलीफ है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अली को बुलाओ।"

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को ले आया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा: "तुम्हें क्या हो गया है?" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: "मेरी आँखों में दर्द है, यहाँ तक कि मैं सामने की चीज़ भी नहीं देख सकता।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरे क़रीब आओ।"

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं: "मेरा सिर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी गोद में रखा। फिर आपने अपने हाथों में थूक लिया और मेरी आँखों पर लगाया।"

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे ठीक हो गए कि मानो उनकी आँखों में कभी कोई तकलीफ हुई ही नहीं थी।

फिर वफ़ात तक आपकी आँखों में कभी कोई तकलीफ नहीं हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआ की और उन्हें झंडा दे दिया।

(सबलुल् हुदा वल रिशाद , भाग 5, पृष्ठ 125-124, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत) (दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, भाग 8 पृष्ठ 390, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर) (बुख़ारी, किताब-उल-मग़ाज़ी, हदीस 4209)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस वाक़िये का वर्णन किया है। वे लिखते हैं:

"ख़ैबर के दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मौक़ा मिला।"

"रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आज मैं उसे मौक़ा दूँगा जो ख़ुदा से मोहब्बत करता है और जिससे ख़ुदा तआला मोहब्बत करता है, और तलवार उसे सौंपूँगा जिसे ख़ुदा तआला ने फ़ज़ीलत दी है।"

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "मैं उस मजलिस में मौजूद था और अपना सिर ऊँचा करता था कि शायद रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे देख लें और मुझे दे दें। मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम देखते और चुप रहते।"

"मैं फिर सिर ऊँचा करता और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर देखते और चुप रहते।"

"यहाँ तक कि अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए, उनकी आँखें सख़्त दुख रही थीं।" "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अली! आगे आओ।"

"वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँचे, तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपना थूक उनकी आँखों पर लगाया और फ़रमाया: 'अल्लाह तआला तुम्हारी आँखों को शिफ़ा दे।'

"यह तलवार लो, जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे सुपुर्द की है।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, भाग 19, पृष्ठ 614)

एक और जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं: "एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने बताया कि इस शहर की फ़तह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों मुक़द्दर है।" "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुबह यह ऐलान किया कि मैं इस्लाम का स्याह झंडा आज उसके हाथ में दूँगा, जिससे ख़ुदा और उसका रसूल और मुसलमान प्यार करते हैं।"

"ख़ुदा तआला ने इस क़िले की फ़तह उसके हाथ पर मुक़द्दर की है।"

"फिर अगली सुबह आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और झंडा उनके सुपुर्द किया।"

"उन्होंने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की फौज को लेकर क़िले पर हमला किया।" "बावजूद इसके कि यहूदी क़िले में महफ़ूज़ थे, अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को उस दिन ऐसी ताक़त बख़्शी कि शाम से पहले ही क़िला फ़तह हो गया।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 326-325)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो दौड़ते हुए झंडा लेकर क़िले के नीचे पहुँचे और झंडे को पत्थरों के बीच गाड़ दिया।

(दारुल् क़ुतुब अल्इल्मिया, बैरूत ,697 सीरत इब्न हिशाम, पृष्ठ)

दुश्मनों के क़त्ल का ज़िक्र हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ख़ैबर के क़िलों में सबसे पहले मरहब के भाई हारिस ने मुक़ाबले के लिए निकल कर जंग की। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे क़त्ल कर दिया, जिससे हारिस के साथी क़िले में वापस भाग गए।

इसके बाद यहूदी जनरल आमिर का क़त्ल हुआ। आमिर बहुत ताक़तवर आदमी था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे कई वार किए, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। फिर आपने उसकी पिंडली पर वार किया, जिससे वह गिर पड़ा और आपने उसे क़त्ल कर दिया और उसके हथियार ले लिए।

(सुब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 125, दारुल् क़ुतुब अल्इल्मिया, बैरूत)

यहूदी जनरल उसीर का क़त्ल एक और यहूदी जनरल उसीर ने मुक़ाबले की मांग की, तो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हो उसके मुक़ाबले के लिए निकले और उसे क़त्ल कर दिया।

(दारुल् क़ुतुब अल्इल्मिया, बैरूत ,311 पृष्ठ ,1 इमताअ अल-इस्माअ, भाग)

मरहब के भाई यासिर का क़त्ल इब्न इसहाक़ लिखते हैं कि मरहब का भाई यासिर जंग के मैदान में आया और जोश में रजज़ (रणगीत) पढ़ने लगा। हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा, "मैं क़सम देता हूँ कि आप मेरे और उसके बीच ना आएं, मैं उससे मुक़ाबला करूंगा।" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो पीछे हट गए।

जब हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो इस काफ़िर से लड़ने के लिए आगे बढ़े, तो उनकी माँ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! वह मेरे बेटे को मार डालेगा।" इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, बल्कि तुम्हारा बेटा ही उसे क़त्ल करेगा, इंशाअल्लाह।"

हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आगे बढ़कर उससे लड़ाई की और उसे क़त्ल कर दिया।

(सुब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 126-125, दारुल् कुतुब अल्इल्मिया, बैरूत)(अल-सीरत अल-नबविया, इब्न हिशाम, पृष्ठ 696, दारुल् कुतुब अल्इल्मिया, बैरूत)

मरहब का मुक़ाबला और उसका क़त्ल इसके बाद ख़ैबर के यहूदियों का सबसे मशहूर बहादुर योद्धा मरहब हथियारों से लैस होकर मैदान में आया और अपने पुराने पढ़े हुए शेर दोहराने लगा:

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّیْ مَرْحَبُ
شَاکِی السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ
اِذَا الْحُرُوبُ اَقْبَلَتْ تُلَهَّبُ

"ख़ैबर जानता है कि मैं मरहब हूँ,

हथियारों से लैस, बहादुर और तजुर्बेकार। जब जंग भड़कती है, तो मैं शेर की तरह टूट पड़ता हूँ।"

इसके मुक़ाबले में हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो निकले। उन्होंने लाल रंग की ज़िरह (कवच) पहन रखी थी। आपने तलवार खींची और शेर पढ़े:

أَنَا الَّذِی سَمَّتْنِی أُمِّی حَیْدَرَہْ
کَلَیْثِ غَابَاتٍ کَرِیْہِ الْمَنْظَرَہْ
أُوفِیهِمُ بِالصَّاعِ کَیْلَ السَّنْدَرَہْ

"मैं वह हूँ जिसे मेरी माँ ने हैदर (शेर) नाम दिया। जंगल के डरावने शेर की तरह।

मैं अपने दुश्मनों को सवा गुना जवाब देता हूँ।" "सवा गुना जवाब देने" का मतलब यह था कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो सिर्फ़ बदला लेने वाले नहीं थे, बल्कि अपने दुश्मनों को करारा जवाब देते थे।

इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने मरहब के सिर पर ज़ोरदार वार किया और उसे क़त्ल कर दिया। इसके बाद क़िला फ़तह हो गया।

दारुल् कुतुब अल्इल्मियाह, ,127-126 पृष्ठ ,5 सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, खंड) बैरूत)(सहीह मुस्लिम (अनुवादित), किताब अल-जिहाद व अल-सीर, बाब ग़ज़वा नूर फाउंडेशन)(लुग़ात अल-हदीस, खंड ,240 पृष्ठ ,9 ज़ी क़रद व ग़ैरहा, खंड साअ', प्रकाशक: नुमानी किताब खाना,' 648 पृष्ठ ,2 वसक', खंड' 487 पृष्ठ ,4 (2005 ,लाहौर

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और मरहब के बीच लड़ाई हुई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े और मरहब पर एक वार किया, जो उसकी खुद (लोहे की टोपी) और सिर को चीरते हुए उसके दांतों तक जा पहुंचा। फिर लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ आगे बढ़े और क़िला फतह कर लिया।

दारुल् कुतुब अल्इल्मियाह, ,127-126 पृष्ठ ,5 सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, खंड) (बैरूत

कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि मरहब को मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल किया था। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब मरहब अपने हथियारों से लैस होकर मुकाबले के लिए क़िले से बाहर आया और जोशीले शेर पढ़ रहा था, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पूछा:

"कौन इसका मुकाबला करेगा?"

हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह! मैं इसका मुकाबला करूंगा। अल्लाह की कसम! इसने कल मेरे भाई को क़त्ल किया था।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "इसके मुकाबले के लिए उठो!" और फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! इसकी मदद फरमा।"

रिवायत में आता है कि जब दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने आए, तो उनके बीच एक पुराना दरख़्त हाइल हो गया। दोनों उस दरख़्त की आड़ में बचने लगे। जब भी कोई एक दरख़्त के पीछे जाता, दूसरा उसकी तरफ़ से दरख़्त को थोड़ा-थोड़ा काटता जाता, यहां तक कि वे आमने-सामने हो गए। फिर मरहब ने हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु पर तलवार चलाई, लेकिन उन्होंने अपनी ढाल से खुद को बचा लिया। मरहब की तलवार उनकी ढाल में फंस गई और उसे काट दिया। हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस पर वार किया और उसे क़त्ल कर दिया।

एक और रिवायत में आता है कि हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मरहब पर वार किया और उसकी टांगें काट दीं, जिससे वह गिर पड़ा। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से गुजरे और उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया।

शारह बुख़ारी हाफ़िज़ इब्न हजर ने लिखा है कि इब्न इसहाक़, मूसा बिन उक़्बा, वाक़िदी और अन्य इतिहासकारों ने लिखा है कि मरहब को मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल किया था। हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मरहब के भाई हारिस को क़त्ल किया था, लेकिन कुछ रावियों को गलती हो गई और उन्होंने हारिस के बजाय मरहब का नाम लिख दिया।

अगर ऐसा नहीं था, तो फिर जो सहीह मुस्लिम में आया है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मरहब को क़त्ल किया, वह अन्य सभी रिवायतों की तुलना में अधिक प्रमाणिक है। सहीह मुस्लिम में हज़रत सलमा बिन अक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ही मरहब को क़त्ल किया था। सहीह मुस्लिम की यह रिवायत दो कारणों से अधिक विश्वसनीय है:

इसकी सनद (श्रृंखला) प्रमाणिक है।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्होंने मोहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु वाली रिवायत वर्णन की, वे ग़ज़वा-ए-ख़ैबर में मौजूद नहीं थे।

इस संबंध में यह भी स्पष्ट रहे कि मरहब और अन्य यहूदियों की मुक़ाबला करने और मारे जाने की घटनाएं किस क़िले में हुईं, इस पर इतिहास और सीरत की किताबों में मतभेद पाया जाता है। बुख़ारी, मुस्लिम और अन्य हदीस की किताबों में किसी क़िले का नाम नहीं दिया गया है। इसी तरह, कुछ किताबों में ये घटनाएं वर्णन की गई हैं, लेकिन किसी क़िले की विशिष्टता नहीं बताई गई, जैसे कि सीरत इब्न हिशाम, तबक़ात इब्न साद, शरह ज़रकानी आदि।

हालांकि, कुछ किताबों में इन घटनाओं को क़िला क़मूस से जोड़ा गया है और कुछ में क़िला नाइम से। बहरहाल, नौ दिनों तक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मुसलमानों के साथ इस क़िले पर हमला करते रहे, यहां तक कि दसवें दिन अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस क़िले पर फ़तह दे दी।

(दारुल् कुतुब अल्इल्मियाह, बैरूत ,120 पृष्ठ ,5 सबलुल् -हुदा वल् रिशाद, खंड) (नफ़ीस अकेडमी, कराची ,116-115 ग़ज़वा-ए-ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ) (दारुल् कुतुब अल्इल्मियाह, बैरूत ,311 पृष्ठ ,1 ,इमताए अल-इस्माअ) (कदीमी कुतुब खाना, आराम बाग ,608 पृष्ठ ,7 ,फत्ह अल-बारी)

मुसलमानों की क़िला नाइम पर फ़तह किसी भी इतिहासकार ने यह उल्लेख नहीं किया कि मुसलमानों ने क़िला नाइम पर कब्ज़े के समय कितनी ग़नीमत और कितने हथियार प्राप्त किए। हो सकता है कि मुसलमानों को कोई महत्वपूर्ण चीज़ न मिली हो, क्योंकि यहूदियों ने पहले ही अपने औरतों और बच्चों को दूसरे क़िलों में भेज दिया था। जब वे हार गए और क़िला नाइम पर मुसलमानों का हमला रोकने में असमर्थ हो गए, तो वे आसानी से क़िला सअब बिन मआज़ में चले गए। क़िला नाइम के युद्ध में एक भी यहूदी मुसलमानों के हाथ क़ैद नहीं हुआ।

(नफ़ीस अकेडमी ,131-129 फत्ह-ए-ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ)

मुसलमानों के लिए दुआ जैसा कि मैं हमेशा दुनिया और मुसलमानों की भलाई के लिए दुआ करने की सलाह देता हूँ, खासतौर पर फिलिस्तीनियों और आमतौर पर पूरी मुस्लिम दुनिया के लिए। लोग खुश हैं कि शायद युद्धविराम (Ceasefire) से हालात बेहतर हो जाएंगे, लेकिन वे बद से बदतर होते जा रहे हैं।

अल्लाह तआला फ़िलिस्तीनियों पर रहम फरमाए। अरब देशों को चाहिए कि वे आपस में एकजुट हो जाएं, वरना फ़िलिस्तीन ही नहीं, बल्कि अन्य अरब देशों को भी गंभीर संकटों का सामना करना पड़ेगा।

(अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 28 फरवरी 2025, पृष्ठ 7-2)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम के आलोक में

(भाषण: श्रीमान हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब, एडिशनल नाज़िर-ए-आला, जुनूबी हिन्द, क़ादियान)

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (آل عمران:۳۲)

अनुवाद : "तुम कह दो कि यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा। और अल्लाह बहुत बख्शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।"

माननीय अध्यक्ष महोदय एवं सम्मानित श्रोता गण!

जैसा कि आपने सुन लिया है, विनीत के भाषण का विषय है "सीरत हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) इश्क-ए-रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के आईने में"।

सम्मानित श्रोतागण!

सैयदना हज़रत अकदस मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"मैं वह आईना हूँ जिसमें मोहम्मदी शक्ल और मोहम्मदी नबुव्वत का पूरा प्रतिबिंब है।"

(हाशिया ,382-381 पृष्ठ ,18 नुज़ूलुल मसीह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग)

सम्मानित श्रोतागण!

वास्तव में, इस ज़माने में सैयदना हज़रत अकदस मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के करामात, मोज़िज़ात, कमालात और ज़िंदा निशानात का मुशाहिदा करना हो तो केवल और केवल हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के आईने में ही देखा जा सकता है। क्योंकि अब फ़ैज़ाने ख़ातमुन नबिय्यीन (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का फ़ैज़ पाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के अलावा कोई और आईना नहीं।

अल्लाह तआला ने हज़रत पाक मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की अज़मत, शान-ओ-शौकत और तक़द्दुस को दुनिया में क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को मबऊस फ़रमाया। और इस मिशन की तकमील के लिए अल्लाह तआला ने आप (अलैहिस्सलाम) के अंदर हज़रत अकदस मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की मुहब्बत और फ़िदाइयत के जज़्बे को इस तरह समाहित कर दिया कि इश्क-ए-मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आपकी रूह की ग़िज़ा बन गया और आपके लिए आब-ए-हयात बन गया।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

وَذِكْرُ الْمُصْطَفٰى رُوْحٌ لِقَلْبِيْ ...٭... وَصَارَ لِمُهْجَتِيْ مِثْلَ الطَّعَامِ

يَاحِبِّ اِنَّكَ قَدْ دَخَلْتَ مَحَبَّةً ...٭... فِيْ مُهْجَتِيْ وَمَدَارِكِيْ وَجَنَانِيْ

مِنْ ذِكْرِ وَجْهِكَ يَا حَدِيْقَةَ بَهْجَتِيْ ...٭... لَمْ اَخْلُ فِيْ لَحْظٍ وَّلَا فِيْ اٰنِ

"मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का वर्णन मेरे दिल की रूह है और आपका वर्णन मेरी ग़िज़ा है, जिसके बिना मैं ज़िंदा नहीं रह सकता।"

"ऐ मेरे माशूक़! ऐ मेरे महबूब! मुहब्बत के लिहाज़ से तू मेरे जिस्म-ओ-जान में सरायित कर चुका है। मेरी जान, मेरे दिमाग और मेरे दिल में बस तू ही तू है।"

"ऐ मेरी ख़ुशी और शादमानी के बाग़! मैं तेरी याद से एक लम्हा और एक पल के लिए भी कभी ख़ाली नहीं रहा।"

सम्मानित श्रोतागण!

हज़रत सय्यदा नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं:

"अक्सर मेरी आँख रात को खुलती और देखती कि हज़ूर (अलैहिस्सलाम) की आँखें ज़ाहिरी तौर पर बंद होतीं परंतुलबों पर दरूद और ज़िक्र-ए-इलाही जारी होता।"

(1996 अक्टूबर 17 ,रोज़नामा 'अल-फ़ज़ल', रबवा)

सम्मानित श्रोतागण!

यह वह सच्चा आशिक-ए-रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) है जो सोते हुए भी याद-ए-हबीब में दरूद शरीफ का विर्द करता है। इसी मुहब्बत की बरकत है कि प्यारे माशूक़ हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने रौया-ओ-कशूफ़ में, बल्कि ऐन बेदारी की हालत में भी अपने आशिक-ए-सादिक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी (अलैहिस्सलाम) को मुलाक़ात का शरफ़ बख़्शा, अपने मुबारक दीदार नसीब फ़रमाए और शफ़क़त-ओ-मुहब्बत का सलूक फ़रमाया।

सम्मानित श्रोतागण!

यह रौया-ओ-कशूफ़ इश्क़-ए-रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की ऐसी ईमान-अफ़रोज़ दास्तानें हैं जो हर सुनने् वाले के अंदर इश्क़-ए-मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के जज़्बात को उभारती हैं और अल्लाह तआला की ज़ात पर कामिल यक़ीन और मुहब्बत पैदा करती हैं।

एक ख़ास रौया का ज़िक्र : अपने जवानी के शुरुआती दौर के एक रौया के बारे में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"शुरुआती जवानी में, एक रात मैंने (स्वप्न में) देखा कि मैं एक आलीशान मकान में हूँ जो निहायत पाक और साफ़ है, और उसमें हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का वर्णन और चर्चा हो रहा है। मैंने लोगों से पूछा कि हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कहाँ तशरीफ़ रखते हैं? उन्होंने एक कमरे की तरफ इशारा किया।"

"इसलिए, मैं भी दूसरे लोगों के साथ वहाँ गया। जब मैं हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में पहुँचा तो हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बहुत ख़ुश हुए और आपने मेरे सलाम का बहुत बेहतर जवाब दिया।"

"फिर नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मुझसे पूछा कि ऐ अहमद! तुम्हारे दाएँ हाथ में क्या चीज़ है? मैंने अर्ज़ किया, 'या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), यह मेरी एक तसनीफ़ (रचना) है।' आपने पूछा, 'इस किताब का क्या नाम है?' मैंने अर्ज़ किया, 'या रसूलुल्लाह, इसका नाम क़ुतबी है।'"

"फिर मैंने देखा कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जैसे ही उसे हाथ में लिया, वह एक नूरानी फल बन गया, और जब आपने उसे चीरकर खोला तो उसमें से शहद जैसा मीठा और पाकीज़ा पानी बहने लगा। फिर हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उस फल का एक टुकड़ा खाया और बाकी मुझे दे दिया और फ़रमाया, 'ऐ अहमद! इसे उस मुर्दा को खिलाओ, जिससे वह ज़िंदा हो जाए।'"

"फिर मैंने देखा कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की कुर्सी ऊँची होती जा रही है, यहाँ तक कि वह छत के क़रीब जा पहुँची और आपका मुबारक चेहरा इतना चमकने लगा कि उस पर सूरज और चाँद की किरणें पड़ रही थीं। उस वक़्त मेरा दिल इश्क़ और वज्द की हालत में था, और मैं बेइख़्तियार रो रहा था।"

(अनुवाद: आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, पृष्ठ 548-549, तज़किरा पृष्ठ 1-3, हाशिया)

कोई धर्म नहीं ऐसा, कि निशान दिखलाए
यह समर, बाग़-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से ही खाया हमने

सम्माननीय श्रोतागण!

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है:

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

निःसंदेह, अल्लाह और उसके फ़रिश्ते इस नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान लाने वालों! तुम भी इस नबी पर दुरूद भेजो और खूब-खूब सलाम भेजो।

सम्माननीय श्रोतागण!

अल्लाह तआला के इस हुक्म की तामील में, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सबसे अधिक दुरूद भेजने वाले व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम ही थे। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"एक रात, इस विनीत (नाचीज़) ने इतनी अधिक मात्रा में दुरूद शरीफ़ पढ़ा कि दिल व जान इससे महक उठे। उसी रात ख्वाब में देखा कि नूर की मशकें आब-ए-ज़लाल (स्वच्छ जल) के रूप में मेरे मकान में लाई जा रही हैं, और उनमें से एक ने कहा कि यह वही बरकतें हैं, जो तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कीओर भेजी थीं।"

(ब्राहीने अहमदिया, हिस्सा चौथा ,598 पृष्ठ ,1 रूहानी ख़ज़ायन, भाग)

फिर एक सभा में आपने फ़रमाया:

"दुरूद शरीफ़ के तुफ़ैल मैं देखता हूँ कि अल्लाह तआला के फ़्यूज़ (इनायतें) अजीब नूरी शक्ल में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ जाते हैं और वहाँ जाकर उनके सीने में समाहित हो जाते हैं। फिर वहाँ से निकलकर उनकी बेहिसाब धाराएँ बन जाती हैं और हर हक़दार को उसकी हिस्सेदारी के अनुसार पहुँचती हैं। निःसंदेह, कोई फ़ैज़, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वसीलत (सिफ़ारिश) के बिना दूसरों तक पहुँच ही नहीं सकता।"

(7 पृष्ठ ,1903 फ़रवरी 28 ,8 नंबर ,7 अल-हकम, भाग)

सम्माननीय श्रोतागण!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुझे इल्हाम (ईश्वरीय सन्देश) के रूप में बताया गया:

كُلُّ بَرَكَةٍ مِّنْ مُّحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ۔

अर्थात: "हर एक बरकत (आशीर्वाद) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से है। बहुत बरकत वाला वह इंसान है जिसने शिक्षा दी, अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, और फिर उसके बाद बहुत बरकत वाला वह है जिसने शिक्षा प्राप्त की, अर्थात यह अज़ीज़ (स्वयं मैं)।"

सम्माननीय श्रोतागण!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामके पवित्र हृदय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रति प्रेम और भक्ति का सागर उमड़ता था। इस प्रेम में कभी कोई कमी नहीं आई। आपकी बीमारी की दवा भी "इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" थी।

एक बार, जब आपको सिरदर्द का अत्यधिक दौरा पड़ा और हाथ-पैर बर्फ़ की तरह ठंडे हो गए, तो आपने हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद कपूरथलवी रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया:

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नअत (स्तुति) में से कुछ शेर पढ़ दो।"

जब उन्होंने नअत पढ़ी, तो आपके शरीर में गर्मी आनी शुरू हो गई।

(असहाब-ए-अहमद, भाग 4, पृष्ठ 95-96)

इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का करिश्मा और दुरूद शरीफ़ की बरकत तो देखिए!

एक बार, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामगंभीर रूप से बीमार हो गए। अल्लाह तआला ने इल्हाम द्वारा दुरूद शरीफ़ के माध्यम से एक जानलेवा बीमारी से शिफ़ा पाने का नुस्खा अता फ़रमाया और अपनी ओर से एक महान चमत्कार और निशान प्रदान किया।

आप फ़रमाते हैं:

"एक बार मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया। हालत इतनी बिगड़ गई कि मेरे परिजनों ने तीन बार यह समझकर कि यह अंतिम समय है, मुझे सूरह यासीन सुनाई।"

"जब तीसरी बार सूरह यासीन सुनाई गई, तो मैंने देखा कि मेरे कुछ परिजन जो अब इस दुनिया में नहीं रहे, दीवारों के पीछे रो रहे थे। मेरी हालत इतनी नाज़ुक थी कि बार-बार खूनी दस्त आते थे और सोलह दिन तक यही स्थिति बनी रही।"

"जब बीमारी का सोलहवाँ दिन आया, तो पूरा परिवार इस विश्वास में था कि आज शाम तक मैं कब्र में होगा। तब अल्लाह तआला ने मुझ पर कृपा की और मुझे एक दुआ इल्हाम के रूप में सिखाई:

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

"सुभान अल्लाहि व बि-हम्दिही, सुभान अल्लाहिल अज़ीम। अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद वा आले मुहम्मद।"

"फिऔर सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने मेरे हृदय में प्रेरणा दी कि तुम्हें नदी के पानी में अपना हाथ डुबोना चाहिए, जिसमें रेत हो सकती है, और इन पवित्र शब्दों का उच्चारण करना चाहिए, और इसे अपनी छाती, पीठ, दोनों हाथों और चेहरे पर रगड़ना चाहिए, क्योंकि तुम इससे ठीक हो जाओगे। इसलिए, जल्दी से नदी का पानी और रेत मंगवाई गई और मैंने वैसा ही करना शुरू कर दिया जैसा मुझे बताया गया था। उस समय मेरी हालत ऐसी थी कि मेरे सिर के हर बाल से आग निकल रही थी और पूरे शरीर में एक दर्दनाक जलन हो रही थी और मेरी अनैच्छिक प्रकृति इस हद तक झुकी हुई थी कि भले ही इसका मतलब मौत हो, लेकिन इस स्थिति से मुक्त होना बेहतर होगा। लेकिन जब मैंने वह प्रक्रिया शुरू की, तो मैं उस ईश्वर की कसम खाता हूं जिसके हाथों में मेरी आत्मा है कि हर बार जब मैंने इन पवित्र शब्दों को पढ़ा और अपने शरीर पर पानी डाला, तो मुझे लगा कि आग मुझसे दूर जा रही है और इसके बजाय, मुझे ठंडक और आराम महसूस हो रहा है। प्याले में पानी खत्म होने से पहले ही मैंने देखा कि बीमारी मुझसे पूरी तरह दूर हो गई थी, और सोलह दिनों के बाद मैं रात को स्वास्थ्य का सपना देखकर सोया। जब सुबह हुई तो मुझे यह इल्हाम हुआ।

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِشِفَآءٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ

अर्थात् यदि तुम्हें उस निशानी पर संदेह हो जो हमने शिफ़ा देकर दिखाई है तो तुम्हें चाहिए कि उसी जैसी कोई दूसरी शिफ़ा पेश करो। ...

(209-208 पृष्ठ ,15 तिरयाक़-उल-क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन, भाग)

रब्त है जान मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मेरी जान को मदाम
दिल को वह जाम लबालब है पिलाया हमने

मुस्तफ़ा पर तेरा बे-हद हो सलाम और रहमत
इससे यह नूर लिया, बार-ख़ुदाया हमने
या रबि, सल्लि अला नबीयिका दाएमन
फी हाज़िहि दुन्या व बअसिन सानी

अर्थ: हे मेरे रब! अपने इस नबी पर हमेशा दुरूद भेज, इस दुनिया में भी और दूसरी ज़िंदगी) (में भी।

सम्माननीय श्रोतागण!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सुन्नत-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (नबी की परंपराओं) की पाबंदी का अत्यधिक ख़्याल था। आप छोटी से छोटी बात में भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुकरण किया करते थे।

आप फ़रमाते हैं:

"मेरी सच्चाई के निशानों में से एक यह भी है कि अल्लाह तआला ने मुझे अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूरी तरह से पैरवी करने की तौफ़ीक़ दी है। मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कोई बात ऐसी नहीं देखी जिसे मैंने पूरा न किया हो।"

(483 पृष्ठ ,5 आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग)

"जब मैं क़ादियान आया, तो मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामने हरी पगड़ी पहनी हुई थी। मुझे यह देखकर थोड़ा अजीब लगा कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलामको रंगीन पगड़ी से क्या मतलब?"

"फिर मैंने 'मुक़द्दिमा इब्ने खलदून' में पढ़ा कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हरे कपड़ों में होते, तो आप पर अधिक वह्यी (ईश्वरीय सन्देश) आती थी।"

(सीरत-उल-महदी, रिवायत नं. 121)

सम्माननीय श्रोतागण!

अपने आका व मुताअ की सुन्नत की पैरवी का यह क्या ही निराला अंदाज़ है कि आपने हरी पगड़ी बांध ली।

एक और वाकया है। हज़रत मिर्ज़ा दीन मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो आफ़ लंगरवाल वर्णन करते हैं कि नमाज़-ए-फज्र के वक़्त आप (अलैहिस्सलाम) पानी के हल्के छींटों से मुझे जगाते थे। एक दफ़ा मैंने दरयाफ्त किया कि हुज़ूर मुझे वैसे ही क्यों नहीं जगा देते? आपने फ़रमाया: "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यही तरीक़ा था, इस सुन्नत पर मैं अमल करता हूँ।"

(492 .सीरत-उल-महदी, रिवायत नं)

खड़े होकर पानी पीने से परहेज़:

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बिला-ज़रूरत खड़े होकर पानी पीने से मना फ़रमाया। एडीटर साहिब 'अल-बदर' हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) के सफ़र-ए-गुरदासपुर का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं: "हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) खड़े हुए थे, आपने पानी माँगा। जब पानी आया तो उसे बैठकर पिया और भी कई दफा देखा गया है कि आप पानी हमेशा बैठकर ही पीते हैं।"

एक और रिवायत है कि एक मौके पर आपकी मजलिस में बाहर से किसी ने दस्तक दी। एक मेहमान दरवाज़ा खोलने के लिए उठे, यह देखकर हज़रत मसीह मौऊद

(अलैहिस्सलाम) जल्दी से खुद उठे और उस दोस्त से फ़रमाया: "ठहरिए, ठहरिए। मैं खुद दरवाज़ा खोलूँगा। आप हमारे मेहमान हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मेहमान का इकराम करना चाहिए।"

(110 सीरत-ए-तैयबा, पृष्ठ)

बीवियों के साथ अच्छा सुलूक

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है:

'व'आशिरूहुन्ना बिल-म'रूफ' (अर्थात अपनी बीवियों के साथ भलाई से ज़िंदगी बिताओ।)

और हमारे हादी-ए-कामिल, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:"तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घर वालों के साथ अच्छा बर्ताव करता है।"

"मेरा यह हाल है कि एक बार मैंने अपनी बीवी पर ऊँची आवाज़ में कोई बात कह दी। मुझे महसूस हुआ कि वह आवाज़ दिल के रंज से मिली हुई थी, हालाँकि कोई दिल दुखाने वाली या सख्त बात मुँह से नहीं निकाली थी। इसके बाद मैंने बहुत देर तक इस्तग़फ़ार किया और बड़ी ख़ुशू-ख़ुज़ू से नफ़्ल नमाज़ें पढ़ीं और कुछ सदक़ा भी दिया।"

(2003 एडिशन ,307 पृष्ठ ,1 मल्फ़ूज़ात, भाग)

अहले-बैत और कूचा-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत: हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

جان ودلم فدائے جمال محمد است   خاکم نثار کوچہ آلِ محمد است

"जान व दिलम फ़िदाये जमाल-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) असत,
ख़ाकम निसार कूचा-ए-आल-ए-मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)असत"

(अर्थात मेरी जान और दिल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खुबसूरती पर फ़िदा हैं, और मेरी हस्ती उनके अहले-बैत के कूचा पर क़ुर्बान है।)

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 645)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत पर ग़म:

हज़रत सैयदा नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करती हैं:

"मर्हरम के महीने में हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) अपने बच्चों को नबासे-ए-रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया सुना रहे थे और आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। आप अपनी उँगलियों से आँसू पोंछते जाते और बड़े दर्दनाक आवाज़ में फ़रमाते:

"यज़ीद पलिद ने यह ज़ुल्म हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नवासे पर करवाया! मगर ख़ुदा ने भी इन ज़ालिमों को बहुत जल्द अपने अज़ाब में पकड़ा।"

उस वक़्त आप पर अजीब कैफ़ियत तारी थी। अपने आका सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जिगरगोशे की शहादत के तसव्वुर से आपका दिल बेचैन हो रहा था और यह सबकुछ रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इश्क़ की वजह से था।

सैयदों (नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वंशजों) का एहतिराम:

एक दफ़ा हज़रत डॉक्टर सैयद अब्दुस्सत्तार साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की मजलिस में नीचे ज़मीन पर बैठे थे। हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की उन पर नज़र पड़ी। आपने ख़ास तौर पर फ़रमाया:

"आप मेरी चारपाई पर आकर बैठ जाएँ, क्योंकि आप सैयद हैं और आपका एहतिराम हमें मंज़ूर है।"

हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रोज़े की हाज़िरी की तड़प:

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं:

"एक दफ़ा घरेलू माहौल में हज का वर्णन हो रहा था। हज़रत मीर नासिर नवाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अब हज का सफ़र आसान हो गया है, हज को चलना चाहिए।"

उस वक़्त हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की आँखें आँसुओं से भर आईं और आप हाथ से आँसू पोंछते जाते थे। आपने फ़रमाया:

"यह तो ठीक है और हमारी भी दिली ख़्वाहिश है, मगर मैं यह सोचता हूँ कि क्या मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मजार को देख भी सकूँगा?"

इस एक छोटे से वाक़िये से ही आपके इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिद्दत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

ग़ैरत-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और दुश्मनों के हमलों पर दर्द: हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"अगर मेरी पूरी औलाद, मेरे सारे दोस्त, और मेरे सारे मददगार मेरी आँखों के सामने क़त्ल कर दिए जाएँ, और मेरे हाथ-पैर काट दिए जाएँ, और मेरी आँख की पुतली निकाल दी जाए, और मैं अपनी समस्त मुरादों से महरूम हो जाऊँ, तो भी मेरे लिए यह सब बर्दाश्त करना आसान है, मगर यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि कोई मेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नापाक हमले करे!"

(15 पृष्ठ ,5 आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग)

आपने और भी फ़रमाया:

"हम सांपों और भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं, मगर उन लोगों से नहीं, जो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नापाक हमले करते हैं!"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23, पृष्ठ 459)

सम्मानित श्रोताओं!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो सच्चा और बेमिसाल इश्क था, उसकी गवाही पूरी दुनिया देती है। अपनों ने भी इसे स्वीकार किया और ग़ैरों ने भी इसका इकरार किया। मलाए आला की गवाही मौजूद है। इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए एक मुहय्यी की तलाश में मलाए आला के लोगों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर इशारा करते हुए यह गवाही दी:

"हाज़ा रजुलुन युहिब्बु रसूलल्लाह"

(यह वह व्यक्ति है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम करता है)। इस कथन का अर्थ यह था कि इस पद की सबसे बड़ी शर्त प्रेम-ए-रसूल है और यह इस व्यक्ति में पूर्ण रूप से पाई जाती है।

(ब्रहाइन-ए-अहमदिया, भाग चौथा, रूहानी खज़ायन, भाग 1, पृष्ठ 598)

हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ि. आँखों देखी गवाही देते हैं:

"मैंने आपको उस समय देखा जब मैं दो वर्ष का बच्चा था, फिर आप मेरी इन आँखों से उस समय ओझल हुए जब मैं 27 वर्ष का युवा था। लेकिन मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूँ कि मैंने आपसे बढ़कर अल्लाह और उसके रसूल से प्रेम में डूबा हुआ कोई व्यक्ति नहीं देखा..."

अगर हज़रत आयशा रज़ि. ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में यह सच कहा था कि "काना खुलुकुहुल-क़ुरआन" (अर्थात आपका स्वभाव क़ुरआन था), तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में इसी तरह कह सकते हैं कि

"كَانَ خُلُقُهٗ حُبَّ مُحَمَّدٍ وَّ اَتْبَاعِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَام۔

"काना खुलुकुहू हुब्ब मुहम्मदिं व अत्तबाहि अलैहिस्सलातु वस्सलाम"।

(सीरतुल महदी, रिवायत नं. 975, प्रकाशित जुलाई 2008)

श्रोताओं!

भारतीय उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध साहित्यकार मिर्ज़ा फरहतुल्लाह बेग साहिब की गवाही भी सुनने् लायक है। वह लिखते हैं कि उनके चाचा मिर्ज़ा इनायतुल्लाह बेग ने उनसे कहा कि जब तुम हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब से मिलने जाओ तो उनकी आँखों को ध्यान से देखना। फरहतुल्लाह बेग साहिब लिखते हैं:

"मैं क़ादियान गया, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आँखों को ध्यान से देखा तो उनमें हरे रंग का पानी घूंटता हुआ महसूस हुआ। जब मैंने वापस आकर अपने चाचा से इसका वर्णन किया तो वे कहने लगे: 'फरहत! देखो, इस शख्स को कभी बुरा मत कहना। यह एक फ़क़ीर है और यह हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सच्चा आशिक़ है।'" जब मैंने पूछा कि आपने यह कैसे जाना? तो उन्होंने कहा: "जो आशिक़-ए-रसूल अपने महबूब के ख्याल में हर समय डूबा रहता है, उसकी आँखों में हरियाली आ जाती है और उसमें एक हरे रंग की लहर चलती रहती है।"

(तारीख़-ए-अहमदियत, भाग 3, पृष्ठ 579-580)

एक और ईमान अफ़रोज़ गवाही: 1886 ई. में बंबई के सेठ इस्माईल आदम साहिब ने अपने पीर रशीदुद्दीन साहिब-उल-इल्म से हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के दावे के बारे में शपथपूर्वक वर्णन माँगा और मार्गदर्शन की दरख्वास्त की। पीर साईं ने अपने जवाबी पत्र में तीन प्रमाण दिए:

पहली गवाही:

"एक दिन माघरिब और इशा के बीच अल्लाह का वर्णन करते हुए कश्फ़ की स्थिति में मैंने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा और पूछा: 'या रसूलल्लाह! यह मिर्ज़ा गुलाम अहमद कौन है?' तो आपने जवाब दिया: 'अज़ मास्त'

(अर्थात यह हमारा ही है।)"

दूसरी गवाही:

"एक रात मैंने ख्वाब में हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा और पूछा कि मौलवियों ने इस व्यक्ति (मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी) पर कुफ्र का फ़तवा दिया है और इसे झुठलाते हैं। तो आपने फ़रमाया: 'दर इश्के मा दीवाना शुद' (अर्थात यह हमारे इश्क़ और मुहब्बत में दीवाना हो गया है।)"

तीसरी गवाही:

"एक दिन तहज्जुद की नमाज़ के बाद थोड़ी झपकी आई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा। मैंने उनका दामन पकड़कर अर्ज़ किया: 'या रसूलल्लाह! अब तो पूरे हिंदुस्तान के अलावा अरब के उलेमा भी इस पर कुफ्र के फ़तवे दे रहे हैं।' तो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन बार फ़रमाया:

هو صادقٌ هو صادقٌ هو صادقٌ

'होवा सादिक़, हुआ सादिक़, होवा सादिक़'

(अर्थात मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद सच्चे हैं, सच्चे हैं, सच्चे हैं)।"

यह जवाब मिलते ही सेठ इस्माईल साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर ली और उनकी आज्ञा का पालन करने लगे। उनके इस परिवर्तन के बाद वह "इस्माईल" से "अबदल" बन गए। (मक्तूबात-ए-अहमद, भाग 3, पृष्ठ 261)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत से मिली असीम आध्यात्मिक शक्ति:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के बाद, उनके साथीगणों में अद्भुत आध्यात्मिक परिवर्तन हुआ और इश्क-ए-मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़बरदस्त जज़्बा उत्पन्न हुआ।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल राजीकी रज़ि. वर्णन करते हैं:

"एक बार तहसीलदार नवाब ख़ान साहिब ने हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि. से पूछा: 'आप तो पहले ही एक बड़े बुज़ुर्ग थे,

फिर आपको हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से और क्या लाभ हुआ?' इस पर हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब ने जवाब दिया:

'नवाब ख़ान! हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से मुझे बहुत लाभ हुए, लेकिन उनमें से एक यह है कि पहले मुझे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ियारत सिर्फ़ ख्वाब में होती थी, लेकिन अब जागते में भी होती है।'"

(हयात-ए-नूर, पृष्ठ 194)

ज़रत मौलवी हसन अली साहिब रज़ि. वर्णन करते हैं:

"मैं मरा हुआ था, ज़िंदा हो गया हूँ।

क़ुरआन करीम की जो महानता अब मेरे दिल में है, पहले न थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जो इज़्ज़त अब मेरे दिल में है, पहले न थी। यह सब हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बदौलत है।

अगर मेरा शरीर भागलपुर या बंगाल में होता है, तो भी मेरी आत्मा सिर्फ़ क़ादियान में होती है।" (असहाब-ए-अहमद,भाग14,पृष्ठ58)

दौर-ए-आख़िरी के सैयदुश्शुहदा हज़रत शहज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इमाम महदी (अ.) के इश्क़ में फ़ना होकर शहादत का जाम पी लिया और दुनिया के धर्मों के इतिहास में एक नया बाब लिख दिया। सैयद अहमद नूर साहिब वर्णन करते हैं कि क़ादियान में हज़रत साहिबज़ादा साहिब को कश्फ़ और इल्हाम होते थे। एक दिन जब वे सोकर उठे तो उन्होंने बताया कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा और फिर यह इल्हाम हुआ:

جِسْمُهُ مُنَوَّرٌ مُعَمَّرٌ مُعَطَّرٌ يُضِيئُ كَاللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْن۔

"जिस्मुहू मुनव्वरुन मुअम्मरुन मुअत्तरुन युज़ीयु कललुअलुइल मकनून"

अर्थात् यह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जिस्म रोशन, बरकतों और रूहानियत से भरा हुआ, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत की ख़ुशबू से महका हुआ और छुपे हुए मोतियों की तरह चमकता हुआ एक रहनुमा सितारा है।

सामइन् किराम! जब काबुल में हज़रत शहज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु को उस स्थान पर ले जाया जा रहा था, जहाँ उन्हें संगसार किया जाना था, तो वे तेज़ी से और बड़ी ख़ुशी के साथ जा रहे थे। उनके हाथों में हथकड़ियाँ लगी हुई थीं। रास्ते में एक मौलवी ने उनसे पूछा कि आप इतने खुश क्यों हैं और इतनी जल्दी क्यों कर रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया:

"ये हथकड़ियाँ नहीं हैं, बल्कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन का ज़ेवर हैं।"

आशिक़ों का शौक़ क़ुर्बानी तो देख ख़ून की इस राह में अर्ज़ानी तो देख

है अकेला कुफ्र से ज़ोर-आज़मा अहमदी की रूह -ए इमानी तो देख

सामइन्-ए-कराम! अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत से ऐसे आशिक़ान-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक जाँनिसार जमाअत क़ायम फ़रमाई है, जो आज भी अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में जान के नज़राने पेश कर रही है। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साए तले हर अहमदी के सीने में इश्क़-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चिराग़ रौशन है।

"ऐ इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मतवालों!

इश्क़-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस चिराग़ को कभी बुझने न देना,

कभी बुझने न देना। इसी में तुम्हारी ज़िंदगी है,

इसी में तुम्हारी निजात है, इसी राह से वसल-ए-इलाही है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"समस्त आदमज़ादों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं सिवाय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के।

सो तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस शान व जलाल के नबी के साथ रखो और उसके अलावा किसी को किसी भी रूप में उस पर बड़ाई न दो, ताकि तुम आसमान पर नजात याफ़्ता लिखे जाओ।"

(14-13 पृष्ठ ,19 किश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग)

सैयदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) फ़रमाते हैं:

"हमारा भी यह फ़र्ज़ है, जिन्होंने अपने आपको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस सच्चे आशिक़ और इमाम-ए-ज़माना के सिलसिले और उसकी जमाअत से जोड़ा है, कि अपनी दुआओं को दरूद में ढाल दें और फ़िज़ा में इतना दरूद सच्चे दिल के साथ बिखेरें कि फ़िज़ा का हर ज़र्रा दरूद से महक उठे और हमारी समस्त दुआएं इस दरूद के वसीले से अल्लाह तआला के दरबार में पहुँचकर क़बूलियत का दर्जा पाने वाली हों। यह है वह प्यार और मुहब्बत का इज़हार, जो हमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात से और उनकी आल से होना चाहिए।"

"अतः, आज हर अहमदी की ज़िम्मेदारी है, बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, कि जिसने इस ज़माने के इमाम को पहचाना है, वह इश्क़-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जज़्बे से बहुत ज़्यादा दरूद पढ़े, दुआएं करे, अपने लिए भी और दूसरे मुसलमानों के लिए भी। अल्लाह तआला उम्मत-ए-मुस्लिमाह को तबाही से बचा ले। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि हम अपनी दुआओं में उम्मत-ए-मुस्लिमाह को बहुत जगह दें।" (ख़ुत्बा जुमा, 24 फ़रवरी 2006)

आज हम क़ादियान की मुक़द्दस बस्ती में मौजूद हैं,

जो आशिक़-ए-सादिक़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मौलिद (जन्मस्थान), मसकन (रहने की जगह), और मर्दन (मक़बरा) है। जिसने यह सदा बुलंद की थी:

"इन्नी अमूतु वला तमूतु मुहब्बती... युद्रा बिज़िक्रिक फ़ित्तुराब निदाई।"

"मैं तो एक दिन मर जाऊँगा, मगर मेरी मुहब्बत कभी नहीं मरेगी। मेरे मरने के बाद भी मेरी क़ब्र की मिट्टी से तेरी मुहब्बत की सदा बुलंद होती रहेगी।"

अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) की इन हिदायतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हज़रत पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अजमत और तक़दुस को सारी दुनिया में क़ायम करने की हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

और जल्दी से जल्दी वह दिन दिखाए कि सारी दुनिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे तले आ जाए, आमीन।

"वह पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा,
नाम उसका है मुहम्मद, दिलबर मेरा यही है।
इस नूर पर फ़िदा हूँ, इसका ही मैं हुआ हूँ,
वह है, मैं चीज़ क्या हूँ, बस फ़ैसला यही है।"

"वा आख़िरुद'वाना अनिल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।"

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْن

★ ★ ★

जमाअत अहमदिया और खिदमत-ए खल्क (सेवा कार्य)

(तनवीर अहमद खादिम भाषण जलसा सालाना क़ादियान 2024)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ (آل عمران:١١١)

अनुवाद : तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो, जो समस्त इंसानों के फ़ायदे के लिए पैदा की गई हो। तुम अच्छाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो।

बताऊँ तुम्हें क्या कि क्या चाहता हूँ?
हूँ बंदा मगर मैं खुदा चाहता हूँ।
मुझे बैर हरगिज़ नहीं है किसी से,
मैं दुनिया में सबका भला चाहता हूँ।

सभापति महोदय और सम्मानीय श्रोता गण!

इस छोटे व्यक्ति के भाषण का शीर्षक है - "जमाअत अहमदिया और सेवा-ए-खल्क़"

सम्मानीय श्रोता गण!

धर्म के दो ही हिस्से होते हैं - एक, अल्लाह तआला का हक़ अदा करना अर्थात उसकी इबादत करना, और दूसरा, उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) से हमदर्दी और उसकी सेवा करना। आज मैं अल्लाह की मख़लूक़ की सेवा के बारे में कुछ वर्णन करूँगा कि इस्लाम इस बारे में क्या तालीम देता है और जमाअत अहमदिया इसमें क्या भूमिका निभा रही है।

सम्मानीय श्रोतागण!

अल्लाह की रज़ा (संतोष) प्राप्त करने के लिए, किसी भी धर्म, रंग या नस्ल का भेदभाव किए बिना, मख़लूक़-ए-ख़ुदा की सेवा, सहायता और मदद करने को सेवा--ए-खल्क़ कहा जाता है।

सेवा-ए-खल्क़, अल्लाह की मुहब्बत की माँग, ईमान की आत्मा और दुनिया व आख़िरत की सफलता का ज़रिया है। केवल आर्थिक सहायता ही सेवा-ए-खल्क़ नहीं है, बल्कि किसी की देखभाल करना, किसी को शिक्षा देना, उपयोगी सलाह देना, किसी को कोई हुनर सिखाना, बौद्धिक मार्गदर्शन करना, शैक्षिक और सामाजिक संस्थाएं स्थापित करना, किसी के दुख-दर्द में शामिल होना, और इस तरह के अन्य कार्य भी सेवा-ए-खल्क़ की विभिन्न राहें हैं।

इस्लाम में इंसानियत के सम्मान और मख़लूक़-ए-ख़ुदा की सेवा व हमदर्दी को बहुत ऊँची नज़र से देखा गया है। क़ुरआन-ए-मजीद और हदीस-ए-नब्वी में जगह--जगह इंसानियत की सेवा को बेहतरीन अख़लाक़ (चरित्र) और महान इबादत करार दिया गया है, जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला ने अपने बंदों को सेवा--ए-खल्क़ पर उभारते हुए फ़रमाया:

अनुवाद:

"इसमें कोई नेकी और महानता नहीं कि तुम अपना रुख़ पूरब या पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि असली नेकी और महानता तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह पर, क़यामत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, आसमानी किताबों पर और नबियों पर ईमान रखे। और वह शख़्स अल्लाह की मुहब्बत में अपने ज़रूरतमंद रिश्तेदारों, गरीब मोमिनों, अन्य ज़रूरतमंदों, बेसहारा मुसाफिरों, सहायता माँगने वालों और क़ैदियों की आज़ादी पर भी अपना माल ख़र्च करे।" (सूरह बक़रह : 177)

क़ुरआन-ए-करीम में एक अन्य स्थान पर फ़रमाया गया:

"تعاونوا على البرّ والتّقوىٰ ولا تعاونوا على الاثم والعدوان

(सूरः अल् मायदा : 2)

"और नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद करो, लेकिन गुनाह और ज़ुल्म में किसी का साथ न दो।"

इस्लाम अपने मानने वालों को यह तालीम देता है कि वे अच्छे और भलाई के कामों में एक-दूसरे की मदद करें और गुनाह और बुरे कामों में किसी की सहायता न करें, बल्कि उन्हें बुराई से रोकें, क्योंकि यह भी सेवा-ए-खल्क़ का एक अहम हिस्सा है।

एक हदीस शरीफ में नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया:

خیر الناس من ینفع الناس

"सबसे बेहतरीन इंसान वह है जो लोगों को फ़ायदा पहुँचाए।"

(तिरमिज़ी)

एक और हदीस में फ़रमाया गया:

"अगर कोई शख़्स रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ हटा दे, तो यह भी सदक़ा (दान) है।" (सहीह मुस्लिम)

क़ुरआन-ए-मजीद और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की तालीमात से हमें यह सबक़ मिलता है कि इंसानों में सबसे अच्छा वह है जो दूसरों के साथ भलाई करे, अपनी ज़ात से लोगों को फायदा पहुँचाए, किसी को तकलीफ न दे, गरीबों, बेसहारों और आम लोगों की मदद करे। अगर वह किसी की मदद नहीं कर सकता, तो कम से कम अच्छे अख़लाक़ और मीठी बातों से उनका दिल खुश करे और उनके दुःख को कम करने की कोशिश करे।

ख़्वाजा मीर दर्द ने क्या खूब फ़रमाया है:

"दर्द-ए-दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को, अन्यथा इबादत के लिए कुछ कम न थे करूबियाँ (फ़रिश्ते)।"

अतः क़ुरआन की आयतों और हदीसों से यह बात स्पष्ट होती है कि इस्लाम इंसा-नियत के सम्मान और सेवा की शिक्षा देता है। यह अनाथों, विधवाओं, मजदूरों, गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता करने की प्रेरणा देता है।

हमें भी चाहिए कि हम व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से, जैसी भी हमारी क्षमता हो, गरीबों और परेशानहाल लोगों की सेवा करें। क्योंकि हदीस शरीफ में मख़लूक़-ए-ख़ुदा को अल्लाह का परिवार बताया गया है और उनकी मदद को अल्लाह की मुहब्बत प्राप्त करने का जरिया करार दिया गया है, जैसा कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया :

"الخلق عیال اللہ فاحبّ الخلق الی اللہ من احسن الیٰ عیالہ" (مشکوۃ).

"सारी मख़लूक़ अल्लाह का परिवार है, और अल्लाह के नज़दीक सबसे पसंदीदा व्यक्ति वह है जो उसके परिवार के साथ भलाई करे।" (मिश्कात)

एक अन्य अवसर पर आपने फ़रमाया :

والذی نفسی بیدہ لا یومن عبد حتی یحب لاخیہ ما یحب لنفسہ.

"कसम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है! कोई बंदा तब तक सच्चा मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई के लिए वही पसंद न करे, जो वह अपने लिए पसंद करता है।"

(सुनन् तिरमिज़ी, किताब-अल्-सीर)

इन हदीसों से न केवल सेवा-ए-खल्क़ की अहमियत उजागर होती है, बल्कि यह भी स्पष्ट होता है कि इस्लाम ने सेवा-ए-खल्क़ के दायरे को किसी एक व्यक्ति या समूह तक सीमित नहीं रखा, बल्कि पूरी इंसानियत के लिए इसे अनिवार्य कर दिया है। गरीब हो या अमीर, शासक हो या सामान्य व्यक्ति, हर इंसान अपनी क्षमता के अनुसार से-वा-ए-खल्क़ का ज़िम्मेदार है।

यहाँ यह बात काबिले तवज्जो है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खिदमत-ए-खल्क़ (मानव सेवा) की सिर्फ़ ज़बानी तालीम नहीं दी, बल्कि आपकी पूरी ज़िंदगी खिदमत-ए-खल्क़ से भरपूर थी।

खिदमत-ए-खल्क़ की अहमियत का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर पहली वही (प्रकाशना) नाज़िल हुई और आप घर तशरीफ़ लाए, तो आपकी हमदर्द और हमसफ़र उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपकी कैफ़ियत को देखकर जो गवाही दी, वह आपकी खिदमत-ए-खल्क़ का ही वर्णन था। उन्होंने कहा :

فَوَاللّٰهِ لَا يُخْزِيْكَ اللّٰهُ أَبَدًا إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَصْدُقُ الْحَدِيْثَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ
وَتَقْرِي الضَّيْفَ وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ

"फवल्लाहि ला युख़ज़ीयकल्लाहु अबदा, इनक लतसिलु रहम, वतस्दुकुल हदीस, वतहमिलुल कल, वतकरी ज़्ज़ैफ, वतुईनु अला नवाएबिल हक़।"

(अल्लाह की क़सम! अल्लाह आपको कभी ज़ाया नहीं करेगा, आप रिश्तेदारों का हक़ अदा करते हैं, सच बोलते हैं, ग़रीबों का बोझ उठाते हैं, नेकी और अच्छे अख़लाक़ क़ायम करते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और मुसीबतज़दों की मदद करते हैं।)

सीरत-ए-तय्यबा (पवित्र जीवन चरित्र) के मुताला से मालूम होता है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नुबूवत से पहले भी खिदमत-ए-खल्क़ में मशहूर थे, और नुबूवत के बाद यह जज़्बा और भी बढ़ गया। गरीबों की मदद, बेसहारा लोगों पर रहम व करम, ज़रूरतमंदों की मदद और कमज़ोरों की हिमायत आपकी वह खास खूबियाँ थीं, जिन्होंने आपको अल्लाह और उसकी मख़लूक़ से जोड़े रखा।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत-ए-खल्क़ की मिसालें: हल्फ़ुल्-फ़ुज़ूल में शरीक होकर मज़लूमों का साथ देना।

एक ग़ैर मुस्लिम बुज़ुर्ग औरत का सामान उठाकर उसके साथ चलना।

फ़तह-ए-मक्का के मौके पर आम माफ़ी का ऐलान।

मदीना की बांदियों का आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मदद लेना। आपके सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) भी खिदमत-ए-खल्क़ के जज़्बे से भरपूर थे।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी और खिदमत-ए-खल्क़

इस दौर में हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने भी अपने आक़ा और मताअ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी में खिदमत-ए-खल्क़ को अपना उसूल बनाया।

शरायत-ए-बैत की चौथी और नौवीं शर्त:

"यह कि आम मख़लूक़ को और ख़ास तौर पर मुसलमानों को अपने नफ़सानी जोश से किसी भी तरह की नाजायज़ तकलीफ़ नहीं देगा, न ज़ुबान से, न हाथ से, और न किसी और तरह से।"

"यह कि आम मख़लूक़ की हमदर्दी में सिर्फ़ अल्लाह के लिए मसरूफ़ रहेगा और जहाँ तक बस चले, अपनी ख़ुदा-दी ताक़तों और नेमतों से इंसानों को फायदा पहुँचाएगा।"

(इश्तेहार तकमील-ए-तबलीग़, 12 जनवरी 1889)

आपने फ़रमाया:

"दीन के दो ही मुकम्मल हिस्से हैं – एक अल्लाह से मुहब्बत करना और दूसरा इंसानों से इतनी मुहब्बत करना कि उनकी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझना और उनके लिए दुआ करना।"

(नसीम-ए-दावत, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 464)

"वह दीन, दीन नहीं जिसमें आम हमदर्दी की तालीम न हो, और न वह इंसान, इंसान है जिसमें हमदर्दी का जज़्बा न हो। हमारा ख़ुदा किसी क़ौम से फ़र्क़ नहीं करता।"

(रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23, पृष्ठ 439)

"मख़लूक़ की हमदर्दी एक ऐसी चीज़ है कि अगर इंसान इसे छोड़ दे और इससे दूर होता जाए तो वह धीरे-धीरे एक दरिंदा बन जाता है। इंसान की इंसानियत का यही तक़ाज़ा है कि जब तक वह अपने भाई के साथ मुहब्बत, नेक बर्ताव और एहसान से पेश आता है, तभी तक वह इंसान है। याद रखो! हमदर्दी का दायरा मेरे नज़दीक बहुत वसीअ (विस्तृत) है... तुम ख़ुदा की समस्त मख़लूक़ से हमदर्दी करो, चाहे वह कोई भी हो – हिंदू हो या मुसलमान या कोई और। मैं कभी ऐसे लोगों की बातें पसंद नहीं करता जो हमदर्दी को सिर्फ़ अपनी ही क़ौम तक महदूद करना चाहते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 184)

बीमारों और ज़रूरतमंदों के लिए एक मुस्तइद (तैयार) ख़ादिम हज़रत मौलवी अब्दुल करीम रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि कई बार देहाती औरतें दवाइयाँ लेने के लिए ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाती थीं और देहाती लहजे में कहती थीं, "मिर्ज़ा जी, ज़रा दरवाज़ा खोलो।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बिल्कुल उसी तरह उठते, जैसे कोई बड़ा हाकिम (शासक) हुक्म दे रहा हो। आप फ़ौरन दरवाज़ा खोलते और बड़े ख़ुश-दिली से पेश आते। वे औरतें कई बार गैर-ज़रूरी बातें करने लगतीं, लेकिन आप तहम्मुल (धैर्य) और वक़ार (गरिमा) से सुनते रहते।

दुश्मनों से हुस्न-ए-सुलूक (अच्छा व्यवहार) किसी अपने से हमदर्दी करना जितना बड़ा अख़लाक़ है, उससे कहीं ज़्यादा बड़ा अख़लाक़ यह है कि इंसान अपने दुश्मनों से भी हमदर्दी करे।

क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ

"वला तस्तवील हसनतु वला सय्यिअह, इद्फ़ा बिल्लती ही अहसन, फ़इज़ल्लज़ी बैनक वबैनहु अदावतुन का अन्नहू वलीय्युन ह़मीम।" (हा-मिम अस्-सज्दा: 35)

अनुवाद: "न अच्छाई और बुराई बराबर हो सकती हैं, और न बुराई और अच्छाई। तुम बुराई का जवाब सबसे बेहतरीन तरीक़े से दो, फिर तुम देखोगे कि जिससे तुम्हारी दुश्मनी थी, वह तुम्हारा जाँ-निसार दोस्त बन जाएगा।"

इस तालीम के मुताबिक़, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने दुश्मनों के साथ बेहतरीन सुलूक किया। मक्का फ़तह के मौक़े पर जब समस्त दुश्मन आपके क़ब्ज़े में आ गए, तो आपने फ़रमाया:

"लातसरीबु अलैकुमुल यौम।"

(आज तुम पर कोई गिरफ़्त नहीं।)

फ़रमा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने जानी दुश्मनों को माफ कर दिया। यह घटना इस बात की गवाही देती रहेगी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुनिया के सभी इंसानों में सबसे ज्यादा रहमदिल, कृपालु और मानवता के सच्चे शुभचिंतक थे।

इस युग में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अनुकरण करते हुए अपने दुश्मनों के साथ हमदर्दी और दया का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"उसके बंदों पर रहम करो और उन पर जुबान, हाथ या किसी भी तरीके से जुल्म न करो। और मख़लूक़ (सृष्टि) की भलाई के लिए कोशिश करते रहो। और किसी पर भी घमंड न करो, चाहे वह तुम्हारा मातहत ही क्यों न हो। और किसी को गाली मत दो, चाहे वह तुम्हें गाली ही क्यों न दे। गरीब, विनम्र, नेकनीयत और सृष्टि के शुभचिंतक बन जाओ, ताकि तुम्हें स्वीकार किया जाए... बड़े होकर छोटे लोगों पर दया करो, उनकी तौहीन न करो। और विद्वान बनकर अज्ञानी को नसीहत करो, न कि अपनी दिखावेबाजी से उन्हें नीचा दिखाओ। और अमीर होकर गरीबों की सेवा करो, न कि अहंकार से उन पर घमंड करो। विनाश के रास्तों से बचो।" (कश्ती-ए-नूह,रूहानी खज़ायन,भाग19,पृष्ठ12-11)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामके निःस्वार्थ सेवा और बलिदान का एक उदाहरण प्रस्तुत है:

क़ादियान में एक व्यक्ति निहाल चंद (निहाला) नामक एक ब्राह्मण था। अपनी जवानी के दिनों में वह मुकदमों में उलझा रहता था और अपनी उम्र के अंतिम वर्षों तक उसकी यही स्थिति बनी रही। वह उन लोगों में से था, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामके परिवार के खिलाफ शरारतें करते रहते थे और उनके विरोधियों के साथ भी रहता था।

आखिरी दिनों में उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई, यहां तक कि उसकी रोज़मर्रा की जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती थीं।

एक बार उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामके दरवाजे पर आकर मिलने की इच्छा व्यक्त की। सूचना मिलने पर आप अलैहिस्सलामतुरंत बाहर आए। उसने सलाम किया और अपनी परेशानी वर्णन करने लगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामने उसे न सिर्फ सांत्वना दी, बल्कि खुद 25 रुपये लाकर उसके हाथ में दे दिए और फ़रमाया कि "फिलहाल इससे अपना काम चला लो, जब दोबारा जरूरत हो तो मुझे बताना।"

इसके बाद वह व्यक्ति हर दो-तीन महीने में आता और अपनी जरूरतों के लिए आप अलैहिस्सलामसे एक उचित राशि प्राप्त करता।

(सिरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पृष्ठ 299)

सम्मानित श्रोतागण! एक और छोटा सा वाकया सुनें:

जब पंजाब में प्लेग (ताऊन) महामारी फैली हुई थी और बड़ी संख्या में लोग इस घातक बीमारी से मर रहे थे, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामकी हमदर्दी और करुणा की क्या हालत थी? इस बारे में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटीरज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं :

"मैंने उन्हें एकांत में दुआ करते हुए सुना और यह नज़ारा देखकर हैरान रह गया।

उनकी आवाज़ में इतनी पीड़ा और दर्द था कि सुनने् वाला भी पिघल जाता था। वे इस तरह रो-रोकर अल्लाह के सामने गिड़गिड़ा रहे थे जैसे कोई प्रसव पीड़ा से तड़प रही महिला हो।

मैंने ध्यान से सुना, तो पाया कि वे अल्लाह से पूरी मानवता को इस महामारी से बचाने की दुआ कर रहे थे:

'ऐ अल्लाह! अगर ये लोग प्लेग से खत्म हो गए, तो फिर तेरी इबादत कौन करेगा?'"

(सीरत तैबा, पृष्ठ 54, हवाला: सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शमाइल व अखलाक, भाग3-, पृष्ठ 395, लेखक: शेख याक़ूब अली इरफानी रज़ियल्लाहु अन्हो)

आप अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत को नसीहत देते हुए फ़रमाते हैं:

"गालियां सुनकर दुआ दो, पाकर दुख, आराम दो।
किबर की आदत जो देखो, तुम दिखाओ इन्केसार"

आज जमाअत-ए-अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलामऔर खलीफ़ाओं की हिदायतों के साए में सेवा-ए-खल्क़ (मानवता की सेवा) के महत्वपूर्ण कर्तव्य को अपनी ज़िम्मेदारी समझती है और इस क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने का प्रयास कर रही है।

चिकित्सा के माध्यम से सेवा

हज़रत मसीह मौद (अलैहिस्सलाम) और खलीफाओं द्वारा इलाज और दुआओं के जरिए हमदर्दाना सेवाओं का सिलसिला हमेशा जारी रहा है। नूर अस्पताल क़ादियान, फज़ल उमर अस्पताल रबवा और नुसरत जहां स्कीम के तहत अफ्रीका के

39 अस्पतालों के माध्यम से मानवता की सेवा। इसी तरह, दुनिया भर में फ्री मेडिकल कैंप के ज़रिए लाखों मरीजों का मुफ्त इलाज और दवाओं की आपूर्ति द्वारा सेवाएँ।

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत, जमाअत द्वारा दुनिया भर में सैकड़ों फ्री होम्योपैथी डिस्पेंसरीज़ की स्थापना, साथ ही ताहिर होम्योपैथिक रिसर्च इंस्टीट्यूट और अस्पताल के माध्यम से सेवाएँ। रबवा में स्थायी रूप से ब्लड बैंक की स्थापना और दुनिया भर में अहमदियों द्वारा रक्तदान का महान सिलसिला।

शैक्षिक सेवाएँ

शैक्षिक सेवाओं में भी जमाअत अहमदिया हमेशा आगे रही है। नज़रत-ए-तालीम, वक़ालत-ए-तालीम और ज़ेली संगठनों में शिक्षा एवं छात्र मामलों का स्थायी विभाग।

नुसरत जहां आगे बढ़ो स्कीम के तहत अफ्रीका के विभिन्न देशों में सैकड़ों स्कूलों के माध्यम से लाखों छात्रों को शिक्षा की सुविधा। उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप और पुरस्कारों की व्यवस्था। फ्री कोचिंग क्लासेज, करियर प्लानिंग सेमिनार, बुक बैंक के माध्यम से ज़रूरतमंद छात्रों को किताबों की आपूर्ति, एमटीए के ज़रिए विभिन्न भाषाएँ सिखाने की कोशिशें, फ्री कंप्यूटर शिक्षा की व्यवस्था, वोकेशनल एजुकेशन की सुविधा और अन्य अनेक सेवाएँ।

अनाथों और विधवाओं की देखभाल

दारुल-ज़ुफ़ा, दारुल-शयूख और दारुल-इक़ामा की स्थापना के माध्यम से अनाथों और विधवाओं की देखभाल की सेवाएँ। विधवाओं की आर्थिक सहायता हेतु स्थायी वजीफों की सुविधा। "बयूतुल-हमद" स्कीम के तहत गरीबों के लिए आवास की व्यवस्था। शहीदों और कैदियों के परिवारों के लिए "सय्यदना बिलाल फंड" की स्थापना।

सामाजिक कल्याण और राहत कार्य

दुनिया भर में जरूरतमंद और पीड़ित जनता की सहायता के लिए जमाअत अहमदिया हमेशा तत्पर रहती है। युद्ध से प्रभावित जनता की सहायता, अकाल, भूकंप, सुनामी, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं में पीड़ितों की सेवा के लिए हर समय तैयार रहती है।

पीड़ित जातियों की सहायता

अफ्रीका के अकाल-ग्रस्त और युद्ध से प्रभावित पीड़ितों के लिए लगातार सेवाएँ। बाल्कन देशों, बोस्निया और अल्बानिया के युद्ध-पीड़ितों के लिए वित्तीय और सामाजिक सहायता। लापता परिजनों को खोजने के लिए अहमदिया टीवी पर विशेष अभियान चलाया गया।

अरब देशों के अधिकार, विशेष रूप से फ़लस्तीन, जॉर्डन, मोरक्को, लेबनान और लीबिया की आज़ादी के लिए सफल राजनयिक प्रयास। दुनिया में कहीं भी पीड़ित जनता के लिए कानूनी, चिकित्सा, आर्थिक और नैतिक समर्थन। वैश्विक जनमत को जागरूक करने के लिए हरसंभव प्रयास।

अन्य सामाजिक सेवाएँ

जमाअत अहमदिया मानवता की सेवा को अपना कर्तव्य समझती है।

मेहमानों की सेवा के लिए "लंगरखाना" हज़रत मसीह मौद (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्थापित किया गया, जो दुनिया के कई स्थानों पर स्थायी रूप से संचालित हो रहा है।

रमजान और ईद के अवसर पर गरीबों को गिफ्ट पैक बांटे जाते हैं।

गर्मियों में विभिन्न स्थानों पर ठंडे पानी की आपूर्ति।

सर्दियों में ज़रूरतमंदों को गर्म कपड़े और खाद्यान्न प्रदान करने की व्यवस्था।

बेसहारा कैदियों को कानूनी और आर्थिक सहायता।

गरीबों की शादियों में सामान और नकद सहायता।

ह्यूमैनिटी फर्स्ट - सेवा का वैश्विक संगठन

सम्मानित श्रोतागण! सेवा कार्यों को संगठित रूप से संचालित करने के लिए हज़रत खलीफ़तुल मसीह IV रज़ियल्लाहु अन्हो ने 1995 में "ह्यूमैनिटी फर्स्ट" की स्थापना की।

आज, अल्लाह के फज़्ल से, खलीफ़त-ए-ख़ामसा के दौर में जमाअत अहमदिया दुनिया भर में मानवता की भलाई के लिए कार्य कर रही है। ह्यूमैनिटी फर्स्ट संगठन दुनिया भर में ज़रूरतमंद और पीड़ित मानवता की सेवा कर रहा है।

अल्लाह के फज़्ल से, ह्यूमैनिटी फर्स्ट की शाखाएँ 50 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी हैं, जहाँ बिना किसी भेदभाव के, रंग-नस्ल, धर्म-संप्रदाय या क्षेत्रीय व भाषाई मतभेदों से परे, ज़रूरतमंद मानवता की सहायता की जा रही है।

ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ का महत्व

ख़ुद्दामुल् अहमदिया से 15 अप्रैल 1938 को संबोधित करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया:

"ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ के कार्य में जितनी अधिक हो सके, व्यापकता अपनानी चाहिए और धर्म तथा जाति की सीमाओं से ऊपर उठकर हर पीड़ित की सहायता करनी चाहिए। चाहे वह हिंदू हो, ईसाई हो या सिख। हमारा ईश्वर 'रब्बुल-आलमीन' है और जिस प्रकार उसने हमें पैदा किया है, उसी तरह उसने हिंदुओं, सिखों और ईसाइयों को भी पैदा किया है। इसलिए यदि ईश्वर हमें सामर्थ्य दे, तो हमें सबकी सेवा करनी चाहिए।" (अल्-फ़ज़्ल, 22 अप्रैल 1938)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह IV रहमहुल्लाह तआला ने मानवता के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए फ़रमाया:

"मेरे दिल की यह इच्छा है कि सारी दुनिया में सबसे अधिक संवेदनशीलता और हमदर्दी का व्यावहारिक प्रदर्शन जमाअत अहमदिया की ओर से हो... मेरे दिल में अल्लाह तआला ने इस मामले में अत्यधिक जोश पैदा किया है। मैं चाहता हूँ कि जमाअत अहमदिया मानवता की सेवा में ऐसे महान कार्य अंजाम दे, जो अपनी व्यापकता के साथ अपनी तीव्रता में भी बढ़ते रहें, यहाँ तक कि जमाअत अहमदिया पूरी दुनिया में सबसे अधिक मानवता की सेवा करने वाली और व्यावहारिक रूप में हमदर्दी दिखाने वाली जमाअत बन जाए।"

(खुत्बात-ए-ताहिर, भाग 2, पृष्ठ 573-572, प्रथम संस्करण, फरवरी 2005)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जर्मनी जलसा सालाना में फ़रमाया :

"हमेशा याद रखें कि जलसा के उद्देश्यों को बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने जहाँ इबादत, तब्लिग, तक़्वा और अन्य कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों की ओर ध्यान दिलाया है, वहीं खासतौर पर इंसानों के हक़ूक़ और उनमें से विशेष रूप से हमदर्दी-ए-खल्क़ पर भी जोर दिया है। वास्तव में, जब एक इंसान के भीतर सच्ची हमदर्दी का जज़्बा पैदा हो जाता है, तो हुक़ूक़-उल-इबाद (इंसानों के अधिकारों की अदायगी) अपने आप होती चली जाती है। इसलिए, हर अहमदी को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

जब भी हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने जलसे का ऐलान किया, तो उन्होंने इस पहलू को विशेष रूप से उजागर किया। आपने जहाँ अल्लाह का डर, तक़्वा, ज़ुहद आदि की ओर ध्यान दिलाया, वहीं नर्मी, आपसी मोहब्बत, भाईचारे, आजिज़ी और इंक्सारी की ओर भी उसी गंभीरता से ध्यान दिलाया। यह समझाना चाहा कि केवल इबादतें तक़्वा नहीं हैं, केवल जमाअत की सेवा कर देना तक़्वा नहीं है, केवल अल्लाह और रसूल से मोहब्बत का इज़्हार करना तक़्वा नहीं है, केवल हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से संबंध रखना तक़्वा नहीं है, बल्कि तक़्वा तब मुकम्मल होता है जब माता-पिता के हक़ अदा किए जाएं, जब बीवी-बच्चों के हक़ अदा किए जाएं, जब रिश्तेदारों, दोस्तों, पड़ोसियों और यहाँ तक कि दुश्मनों के हक़ भी अदा किए जाएं।"

सेवा-ए-खल्क़ के कार्यों पर जोर:

"जमाअत में सेवा-ए-खल्क़ और इंसानियत की सेवा के लिए जितना जोर दिया जाता है और हर अमीर-ग़रीब अपनी क्षमता के अनुसार इस प्रयास में होता है कि कब उसे मौक़ा मिले और वह अल्लाह की रज़ा के लिए सेवा-ए-खल्क़ का कार्य कर सके।

हर अहमदी के दिल में सेवा-ए-खल्क़ का जज़्बा क्यों इतना प्रबल है? क्योंकि इस्लाम की जिस ख़ूबसूरत तालीम को हम भूल चुके थे कि अगर अल्लाह तआला की मोहब्बत चाहते हो, तो उसकी मखलूक़ से अच्छा सुलूक करो और उनकी ज़रूरतों का ख़याल रखो। यह भी अल्लाह के क़रीब होने का एक बड़ा ज़रिया है। हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने अपनी शर्त-ए-बैअत में इसे एक बुनियादी शर्त बनाया कि मुझसे जुड़ने के बाद अपनी समस्त ताक़तों और नेमतों से अल्लाह की मखलूक़ की न केवल हमदर्दी करो, बल्कि उन्हें फ़ायदा भी पहुँचाओ।

इसलिए, अगर कहीं भूकंप से प्रभावित लोगों की मदद की आवश्यकता होती है, तो अहमदी सबसे पहले आगे आता है। अगर बाढ़ से पीड़ित लोगों की मदद की ज़रूरत होती है, तो अहमदी आगे आता है। कई बार ऐसे मौके भी आए जब अहमदी नौजवानों ने पानी की तेज़ धाराओं में अपनी जान कुर्बान कर दी, लेकिन दूसरों की जान बचा ली।

फिर, जब खलीफ़ा-ए-वक़्त ने कहा कि मुझे अफ्रीका के ग़रीब बच्चों की तालीम और बीमार मखलूक़, जिन्हें इलाज की सहूलत मयस्सर नहीं, उनके लिए स्कूल और अस्पताल खोलने हेतु धन चाहिए, तो जमाअत के अफ़राद ने इस हमदर्दी के

जज़्बे के तहत इतनी बड़ी रकम जमा कर दी, जो माँगी गई रकम से कई गुना अधिक थी। फिर, जब खलीफ़ा-ए-वक़्त ने कहा कि धन तो इकट्ठा हो गया, अब मुझे इन स्कूलों और अस्पतालों को चलाने के लिए स्टाफ़ की ज़रूरत है, तो डॉक्टरों और शिक्षकों ने अपनी ज़िंदगियाँ इस सेवा के लिए पेश कर दीं।

अब अफ़्रीका के हालात कुछ बेहतर हो गए हैं, लेकिन 1970 के दशक में जब 'नुसरत जहाँ स्कीम' शुरू की गई थी, तब हालात बेहद ख़राब थे। इन कठिन परिस्थितियों में भी इन सेवकों ने कोई परवाह नहीं की। कई डॉक्टर और शिक्षक अच्छी नौकरियों पर थे, लेकिन वक़्फ़ करने के बाद गाँवों में जाकर रहने लगे। वहाँ न बिजली थी, न पानी की सुविधा, लेकिन वे इंसानियत की सेवा के वचन को निभाने के लिए डटे रहे।

शुरुआत में अस्पतालों की हालत ऐसी थी कि लकड़ी की मेज़ पर मरीज को लिटाया जाता, लैंप की रोशनी में ऑपरेशन किए जाते, और जो भी औज़ार उपलब्ध थे, उसी से इलाज किया जाता। फिर डॉक्टर हाथ उठाकर दुआ करते, 'ऐ अल्लाह, मेरे पास जो भी था, मैंने उस से इलाज किया, अब तू ही शिफ़ा दे।' और अल्लाह ने इन क़ुर्बानी देने वाले डॉक्टरों की क़दर की, ऐसे-ऐसे लाइलाज मरीज़ ठीक हो गए कि दुनिया हैरान रह गई।

फिर, आर्थिक ज़रूरतें भी अल्लाह ने इस तरह पूरी कीं कि बड़े-बड़े अमीर भी शहरों के बड़े अस्पताल छोड़कर हमारे छोटे देहाती अस्पतालों में इलाज कराने आने लगे। इसी तरह शिक्षकों ने भी हमदर्दी के जज़्बे से बच्चों को तालीम दी। डॉक्टर्स और टीचर्स की यह सेवाएँ आज भी जारी हैं। अल्लाह यह सिलसिला क़ायम रखे और इन सेवकों को अज़ीम अज्र से नवाज़ता रहे।"

(ख़ुत्बा जुमा, 17 अक्टूबर 2003)

इसी तरह आपने फ़रमाया:

"पिछले वर्षों में जब कोरोना वायरस ने दुनिया को अपनी चपेट में ले रखा था और खाद्य संकट एक गंभीर समस्या बनता जा रहा था। विकसित देश भी इसकी चपेट में थे, लेकिन गरीब देशों में, जहाँ पहले से ही लोग भूख और गरीबी से परेशान थे, वहाँ इस वायरस के कारण हालात और भी कठिन हो गए। ऐसे मुश्किल समय में भी, जमाअत अहमदिया के लोग दुनिया के हर कोने में इंसानियत की सेवा के जज़्बे के साथ हर संभव कोशिश कर रहे थे। दुनिया के विभिन्न देशों में मजलिस ख़ुद्दाम-उल-अहमदिया ने ह्यूमैनिटी फर्स्ट के तहत स्वयंसेवकों के रूप में गाँवों और शहरों में हज़ारों लोगों तक राशन, पानी, फेस मास्क, हैंड सैनिटाइज़र और अन्य चिकित्सा सुविधाएँ पहुँचाई। साथ ही, विभिन्न अस्पतालों में जाकर बड़ी संख्या में मरीजों को फेस मास्क उपलब्ध कराए।

संक्षेप में, अल्लाह के फज़्ल और करम से, जमाअत अहमदिया, जो एक वैश्विक धार्मिक संगठन है, जिसका मिशन सेवा-ए-खल्क (मानवता की सेवा) है और जिसका नारा 'सबके लिए प्रेम, किसी से बैर नहीं' है, अपने सीमित संसाधनों के बावजूद, पूरे विश्व में बिना किसी भेदभाव के धर्म, जाति, रंग या नस्ल से परे मानवता की सेवा में लगी हुई है।

सम्मानित श्रोता! जमाअत अहमदिया, पूरी दुनिया में खिलाफत-ए-हक़्क़ा-इस्लामिया के नेतृत्व में सेवा-ए-खल्क़ की महान ज़िम्मेदारी को सिर्फ़ अल्लाह के लिए निभा रही है। और यह हमेशा इस सिद्धांत पर अमल करती है कि "इन्ना अजरीय इल्ला अला रब्बिल आलमीन" (अश-शुअरा: 165), अर्थात् मेरा इनाम सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। साथ ही, यह खुलेआम घोषणा करती है "ला नुरीदु मिनकुम जज़ाअं वला शुकूरा" (अद-दहर: 10), अर्थात् हम इस सेवा के बदले में न तो तुमसे कोई बदला चाहते हैं और न ही यह चाहते हैं कि तुम हमारा शुक्रिया अदा करो।

हमें चाहिए कि हम संपूर्ण भलाई का प्रतीक बनकर मानवता की भलाई के लिए कार्य करें ताकि यह समाज स्वर्ग के समान बन जाए। अल्लाह हमें इस की तौफीक़ अता करे।

अल्लाह तआला जमाअत के सभी लोगों को अपनी शिक्षाओं के अनुसार निःस्वार्थ और ईमानदारी से सेवा करने की तौफीक़ देता रहे। आमीन।

अन्य समुदायों की स्वीकृति

जमाअत अहमदिया की मानवता की सेवा को स्वीकार करते हुए पंजाब के पूर्व मंत्री नत्था सिंह जी डालम ने गुजरात में आए भूकंप के लिए क़ादियान से राहत सामग्री भेजते हुए कहा:

"बीमारों, जरूरतमंदों और दुखी मानवता की सेवा, दुनिया की सबसे बड़ी सेवा है। दुनिया के सभी धर्म इंसान की सेवा और आपसी प्रेम की शिक्षा देते हैं।"

श्री दालम ने अहमदिया जमाअत द्वारा समाज के कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इस जमाअत ने देश में स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है। जब भी देश में कोई प्राकृतिक आपदा आई, उन्होंने सबसे आगे बढ़कर दुखी मानवता की सेवा की। गुजरात के भूकंप से प्रभावित लोगों के लिए उन्होंने पैंतीस लाख रुपये की राहत सहायता भेजी। उन्होंने यह भी कहा कि जमाअत ने मुख्यमंत्री गुजरात राहत कोष में बड़ी धनराशि देकर सहयोग दिया है। अहमदिया जमाअत की लंदन और अन्य देशों से आई टीमों ने सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र भुज में जाकर सेवा की, जो अत्यंत प्रशंसनीय है।"*

(स्रोत: दैनिक जागरण, जालंधर, 23 मार्च 2001)

महान विचारकों की राय महान विचारक डॉ. अल्लामा इक़बाल ने लिखा:

"पंजाब में इस्लामी सीरत (चरित्र) का शुद्धतम नमूना इस जमाअत के रूप में प्रकट हुआ है, जिसे 'क़ादियानी फ़िरक़ा' कहा जाता है।"

(स्रोत: "क़ौमी ज़िंदगी और मिल्लत-ए-बैज़ा पर एक समाजशास्त्रीय दृष्टि", पृष्ठ 84)

महान विद्वान अल्लामा नियाज़ फतेहपुरी ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के बारे में लिखा:

"इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने निश्चित रूप से इस्लामी नैतिकता को पुनर्जीवित किया और एक ऐसी जमाअत स्थापित की जिसकी जीवनशैली को हम निस्संदेह नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की परछाई कह सकते हैं।"

(स्रोत: "मुलाहिज़ात नियाज़ फतेहपुरी", पृष्ठ 29)

दिल्ली के समाचार पत्र "स्टेट्समैन" के संपादक ने लिखा:

"क़ादियान के पवित्र शहर में एक भारतीय पैगंबर जन्मा, जिसने अपने आसपास के लोगों को भलाई और उच्च नैतिकता से भर दिया। ये गुण उसके लाखों अनुयायियों के जीवन में भी परिलक्षित होते हैं।"

(स्रोत: स्टेट्समैन, दिल्ली, 12 फरवरी 1949)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के वचन

सम्मानित श्रोता! मैं अपनी भाषण का समापन जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद (अलैहिस्सलाम) के इन वचनों से करता हूँ:

मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कि किसी व्यक्ति का ईमान तब तक परिपूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपने आराम से अधिक अपने भाई के आराम को प्राथमिकता न दे। अगर मेरा कोई भाई मेरी आँखों के सामने अपनी कमजोरी और बीमारी की वजह से ज़मीन पर सोता है और मैं, अपनी सेहत और तंदुरुस्ती के बावजूद, चारपाई पर सोने का अधिकार जताता हूँ और उसे उस पर बैठने नहीं देता, तो मेरी इस हालत पर अफ़सोस है। अगर मैं उठकर उसे अपनी चारपाई न दूँ और ख़ुद ज़मीन पर न सो जाऊँ, तो मेरा ईमान अधूरा है।

अगर मेरा भाई बीमार है और किसी दर्द से पीड़ित है, तो मेरी स्थिति पर लानत है अगर मैं उसके साथ कठोरता से पेश आऊँ। बल्कि मुझे चाहिए कि मैं उसके प्रति सहानुभूति रखूँ और अपनी नमाज़ों में उसके लिए रो-रोकर दुआ करूँ, क्योंकि वह मेरा भाई है और आत्मिक रूप से बीमार है।

अगर मेरा भाई सीधा-सादा या कम पढ़ा-लिखा है या उसकी सादगी के कारण उससे कोई गलती हो जाती है, तो मुझे उसे नीचा दिखाने की बजाय, सहनशीलता अपनानी चाहिए। मैं उसे अपमानित न करूँ, न ही उसके दोषों की बुराई करूँ, क्योंकि ये सब विनाश की राहें हैं। कोई भी सच्चा मोमिन तब तक नहीं हो सकता जब तक उसका दिल कोमल न हो, जब तक वह ख़ुद को सब से अधिक तुच्छ न समझे और जब तक वह विनम्रता और सेवा का व्यवहार न अपनाए।

समाज के सबसे निचले स्तर पर सेवा करना, समाज में सम्मान का प्रतीक है। गरीबों से प्रेमपूर्वक और झुककर बात करना, ईश्वर की कृपा प्राप्त करने की निशानी है। बुराई का जवाब अच्छाई से देना, पुण्य की निशानी है। क्रोध को पी जाना और कड़वी बातों को सह लेना, महानता की पहचान है।"

(स्रोत: "रूहानी ख़ज़ायन", खंड 6, पृष्ठ 395)

अल्लाह तआला हमें क़ुरआन, हदीस, हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और खलीफ़ाओं की शिक्षाओं के अनुसार सेवा-ए-खल्क़ को अपने जीवन का उद्देश्य बनाने की तौफ़ीक़ दे। हम "LOVE FOR ALL, HATRED FOR NONE" का नारा बुलंद करते हुए, बिना किसी भेदभाव के, मानवता की निःस्वार्थ सेवा करें और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करें। आमीन।

"वाख़िरु द'वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।"

وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العلمین

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

आगाज़ फ़रमाया।

तशह्हुद, तआव्वुज़ और सूरह् अल्-फातेहा की तिलावत के बाद हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने फ़रमाया:

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलातु वस्सलाम) का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी मअहूद हूं, जिसके आने की पेशगोई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा, क्योंकि यही मसीह मौऊद के आने का वक्त था, जिसमें ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है। इस ज़माने में वे समस्त हालात प्रकट हुए, जिनकी निशानदेही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाई थी।

वे समस्त भावीयवाणियाँ पूरी हुईं, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह की निशानी के तौर पर बताई थीं। आपने दुनिया को दावत दी, खास तौर पर मुसलमानों को दावत दी कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भावीयवाणियाँ को देखो, ग़ौर करो और समझो कि इसी में सआदत है, इसी में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्मों की तामील है।

आपने यह साफ़ फ़रमाया कि मुझ पर यह इल्ज़ाम न लगाओ कि मैंने (नौज़बिल्ला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीन की। यह सरासर झूठा इल्ज़ाम है, जो मुझ पर लगाया गया है।

मैं तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में, आपके दीन की अशाअत के लिए आया हूं। मेरे दिल में तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इश्क कोट-कोट कर भरा हुआ है।

आपने अपनी बेशुमार किताबों, तहरीरों, तकरीरों, मजलिसों और निजी जिंदगी में इन बातों का इज़्हार फ़रमाया।

आपने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इश्क व मोहब्बत का ऐसा इज़्हार किया है, जिसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती, ऐसा इश्क व मोहब्बत जो कहीं और देखने में नहीं आता।

इसलिए इस हवाले से आज मैं कुछ अक्तबासात पेश करूंगा, जिससे इस इश्क व मोहब्बत की झलक मिलती है, जो आपको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से था।

इसलिए, आप (अलैहिस्सलाम) और आपके मानने वालों पर यह इल्ज़ाम लगाने वाले कि (नौज़बिल्लाह) हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) या आपके मानने वाले तौहीन-ए-रिसालत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुर्तकिब हो रहे हैं, यह बेहद घिनौना और गलत इल्ज़ाम है।

फिर हज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के मुख्तलिफ अक्तबासात पेश फरमाए:

"मैं हमेशा तअज्जुब की नजर से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार-हज़ार दुरूद और सलाम उस पर) यह किस आली मरतबा का नबी है। उसके आली मकाम की इंतिहा मालूम नहीं हो सकती और उसकी तासीर-ए-कुदसी का अंदाज़ा इंसान का काम नहीं।

अफसोस कि जैसी पहचान का हक है, उसके मकाम को पहचाना नहीं गया। वही तोहिद जो दुनिया से गुम हो चुकी थी, वही एक पहलवान है जो दोबारा दुनिया में लाया।"

(हकीकतुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 22, पृष्ठ 118-119)

फिर आप (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं :

"जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं तो समस्त सिलसिला-ए-नुबुव्वत में से आला दर्जे का बहादुर नबी और ज़िंदा नबी और अल्लाह का सबसे प्यारा नबी सिर्फ एक शख्स को जानते हैं। यानी वही नबियों के सरदार, रसूलों का फ़ख्र, समस्त मुरसलों का सरताज जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफा और अहमद मुज्तबा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) है। जिनके साये में दस दिन चलने से वो रौशनी मिलती है जो पहले हज़ार साल तक नहीं मिल सकती थी।"

(सिराज-ए-मुनीर, रूहानी खज़ायन, भाग 12, पृष्ठ 89)

साथ ही आप फ़रमाते हैं:

"एक रात इस आजिज ने इतनी कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ा कि दिल व जान इससे महक उठे। उसी रात ख्वाब में देखा कि आबे ज़ुलाल की सूरत पर नूर के मश्कें इस आजिज के मकान में लाई जा रही हैं और उनमें से एक ने कहा कि ये वही बरकतें हैं जो तूने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ भेजी थीं।

और ऐसा ही एक और अजीब वाकया याद आता है कि एक बार इल्हाम हुआ, जिसका मतलब यह था कि मलए आला के लोग झगड़े में हैं यानी अल्लाह की मर्ज़ी दीन के इहया (पुनर्जीवन) के लिए जोश में है, लेकिन अभी तक मलए आला पर उस शख्स की तअय्युन नहीं हुआ है जो इस काम के लिए है।

इसी दौरान ख्वाब में देखा कि लोग एक 'मुहय्यी' (जिंदा करने वाले) को तलाश कर रहे हैं। फिर एक शख्स इस आजिज के सामने आया और इशारे से कहा: "हाज़ा रजुल युहिब्बु रसूलल्लाह" यानी "यह वह आदमी है जो रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से मोहब्बत रखता है।" और इसका मतलब यह था कि इस ओहदे की सबसे बड़ी शर्त रसूल से मोहब्बत है, जो इस शख्स में मौजूद है।"

(3 हाशिया नंबर ,598 पृष्ठ ,1 ब्रहीन-ए-अहमदिया हिस्सा चौथा, रूहानी ख़ज़ायन, भाग)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"इस ज़माने में भी जो कुछ अल्लाह का फज़्ल और करम नाज़िल हो रहा है, वह सिर्फ आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की इताअत (आज्ञा पालन) और पैरवी से ही मिलता है।

मैं सच कहता हूँ और अपने तजुर्बे से कहता हूँ कि कोई भी शख़्स हकीकी नेकी करने वाला और अल्लाह की रज़ा पाने वाला नहीं ठहर सकता और उन इनामात, बरकात, मआरीफ, हकायक और कशूफ से बहरावर नहीं हो सकता जो आला दर्जे के तज़किया-ए-नफ्स पर मिलते हैं, जब तक कि वह रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पैरवी में खो न जाए।

और इसका सबूत ख़ुद अल्लाह के कलाम से मिलता है:

"कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाहा फत्तबिउनी युहबिबकुमुल्लाह"

(आले इमरान: 32)

और अल्लाह के इस दावे की ज़िंदा और अमली दलील मैं ख़ुद हूँ। इन निशानियों के साथ, जो अल्लाह के महबूबों और वलियों के लिए कुरआन शरीफ में मुक़र्रर हैं, मुझे पहचानो।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 132)

हज़रत डॉक्टर मीर मोहम्मद इस्माइल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब फ़रमाया करते थे:

"एक दफा का वाकया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मकान के साथ वाली छोटी मस्जिद में, जो 'मस्जिद मुबारक' कहलाती है, अकेले टहल रहे थे और धीरे-धीरे कुछ गुनगुना रहे थे और साथ ही आपकी आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी।

उस वक्त आप हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) का यह शेर पढ़ रहे थे, जो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की वफात पर कहा था:

"कुन्तस्सवादा लि नाज़री फअमिया अलैकन-नाज़िरु
मन शा बअदका फलयमुत फअलैक कुन्तु उहाज़िरु"

अर्थात्: "तुम मेरी आँख की पुतली थे, जो आज तुम्हारी वफात की वजह से अंधी हो गई है। अब तुम्हारे बाद जो चाहे मरे, मुझे तो सिर्फ तुम्हारी मौत का डर था जो वाक़े हो गई।"

मैंने घबराकर अर्ज़ किया कि हज़रत! यह क्या मामला है, आपको कौन सा ग़म पहुंचा है?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मैं इस वक्त हस्सान बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) का यह शेर पढ़ रहा था और मेरे दिल में यह आरज़ू पैदा हो रही थी कि काश! यह शेर मेरी ज़बान से निकलता।"

आखिर में हज़रत खलीफा-ए-वक्त ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को अक़्ल और शऊर दे कि वे बेवजह की मुखालिफत से बाज आएं। सोचें कि क्या अल्लाह उनसे नहीं पूछेगा कि तुमने बिना तहकीक के मुखालिफत की? क्योंकि अक्सर लोग बिना तहकीक के सिर्फ मौलवियों के कहने पर मुखालिफत करते हैं।

कुछ तो ग़ौर करो! अल्लाह मुसलमानों को अक़्ल दे कि वे इस पर सोचें और हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम यह दावा कि हमें पैगंबर से मोहब्बत है, अपने हर अमल से साबित करें और रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लिए जो इश्क़ व मोहब्बत है, उसमें बढ़ते चले जाएं।

और सिर्फ ज़बानी बातें न हों, बल्कि हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानते हैं, उसका हक़ अदा करने वाले बनें।

हम अपने दिलों का जायज़ा लेते रहें कि जो जज़्बात हज़रत मसीह मौऊद

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 13-20 March 2025 Issue No. 11-12

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

अलैहिस्सलाम के थे, क्या वे हमारे दिलों में भी पैदा होते हैं?

अल्लाह की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए वह कोशिश करें, जिसका हमसे मुतालबा किया गया है, और हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहें।"

आख़िर में आपने दुआ करवाई।

फिर क़ादियान, टोगो, बुर्किना फासो, गिनी बिसाउ, नाइजर, सेनेगल से शिरकत करने वाले लोगों ने तरानों के ज़रिए ख़िलाफ़त से अपने इश्क़ का इज़्हार किया। 5 बजकर 43 मिनट पर हज़रत खलीफा-ए-वक्त ने "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" का तोहफा अता फरमाकर इवान-ए-मसरूर से रुख़सत इख्तियार की।

चौथा अंतिम भाग

महिलाओं का जलसा दिनांक 28 दिसंबर 2024

दिनांक 28 दिसंबर 2024 को जलसा सालाना क़ादियान के दूसरे दिन के कार्यक्रम को सुनने् के लिए मस्जिद दारुल अनवार में प्रबंध किया गया था। सराय ताहिर के बेसमेंट में भी महिलाओं के लिए जलसा सुनने् की व्यवस्था की गई थी। दूसरे सत्र में महिलाओं का अपना जलसा आयोजित किया गया, जो दोपहर ढाई बजे माननीय नुसरत बेगम बदर साहिबा, पत्नी माननीय मुनीर अहमद साहिब हाफिज़ाबादी (पूर्व सदर लजना इमाइल्लाह क़ादियान) की अध्यक्षता में आरंभ हुआ।

माननीय अमतुल हादी शिरीन साहिबा ने तिलावत की। माननीय वजिहा बशारत साहिबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम:

"मेरे मौला, मेरी यह एक दुआ है
तेरी दरगाह में इजज़ो व बका है"

खूबसूरत अंदाज में पेश किया।

पहला भाषण "औलाद की तरबियत में माताओं का किरदार — हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इर्शादात की रौशनी में" के विषय पर माननीय नईमा आरिफ साहिबा (पूर्व सदर लजना इमाइल्लाह सिकंदराबाद) ने दिया

इसके बाद माननीय नसीफा अहमद साहिबा (बंगाल) ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का कलाम:

"ज़िक्रे खुदा पर जोर दे, ज़ुल्मते दिल मिटाए जा
गौहर-ए-शब चराग़ बन, दुनिया में जगमगाए जा"

खूबसूरत अंदाज में पेश किया।

दूसरा भाषण "इस्लामी पर्दे की अहमियत और बरकतें — हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इर्शादात की रौशनी में" के विषय पर माननीय सदर साहिबा लजना इमाइल्लाह भारत ने पेश किया।

दुआ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

क़ादियान के साथ अफ्रीकी देशों के जलसे

तीसरे दिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदाहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के अंतिम संबोधन और दुआ के साथ जलसा सालाना क़ादियान का समापन हुआ। हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला के संबोधन का शामिलीन को बेसब्री से इंतज़ार रहता है।

अल्लाह तआला के फज़ल और करम से दो दिन की बारिश के बाद तीसरे दिन सूरज ने खूब चमक के साथ अपना दीदार कराया, जिससे तीसरे दिन का जलसा बस्तान अहमद (अर्थात जलसा गाह) में हुआ और हाज़ेरीन की प्यास बुझी अल्हम्दोलिल्लाह।

हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला का खिताब लोगों ने पूरे शौक और ध्यान से सुना। जलसा गाह पूरी तरह भरा हुआ था। हज़ूर के संबोधन के दौरान अफ्रीका के आठ देशों टोगो, माली, गिनी कोनाक्री, नाइजर, गिनी बिसाऊ, सेनेगल, बुर्किना फासो के जलसा गाह भी दिखाए जा रहे थे। इन देशों के जलसे भी क़ादियान के जलसे के साथ समाप्त हो रहे थे और वे भी अपने-अपने जलसा गाह में हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ का संबोधन सुन रहे थे।

यह दृश्य बहुत ही शानदार और ईमान अफ़रोज़ था।

हज़ूर पुरनूर अय्यदाहुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने संबोधन के अंत में फ़रमाया:

"इस समय हमारे क़ादियान के जलसे के साथ दुनिया के विभिन्न देशों में जलसे हो रहे हैं। ये सब इस लिए यहाँ जमा हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को समझें और दुनिया तक पहुँचाने की कोशिश करें और अपनी इस्लाह की भी कोशिश करें। अल्लाह तआला इन सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फरमाए और वे सब बरकतें लेकर जाएं जिन बरकतों को पाने के लिए इस जलसे में शामिल हुए हैं।"

विभाग-ए-तरबियत

दिनांक 24 दिसंबर 2024 से 1 जनवरी 2025 तक मस्जिद अक़्सा और मस्जिद अनवार में तहज्जुद की नमाज़ बाअजमात अदा की गई।

और जलसे के तीनों दिन क़ादियान की सभी मस्जिदों में बाअजमात तहज्जुद की नमाज़ का एहतिमाम किया गया। साथ ही नए साल के आगमन के अवसर पर 1 जनवरी को क़ादियान की सभी मस्जिदों में तहज्जुद की नमाज़ अदा की गई, जिससे जलसे में आए मेहमानों ने विशेष लाभ उठाया।

तहज्जुद की नमाज़ के लिए विभाग-ए-तरबियत की ओर से जगाने का प्रबंध किया गया था। दुरूद शरीफ और पाकीज़ा अशआर पढ़कर लोगों को तहज्जुद के लिए जगाया गया।

नमाज़-ए-फज्र के बाद तफ्सीर-ए-कबीर से कुरआन मजीद का दर्स दिया गया।

क़ादियान के सभी मोहल्लों और जलसा गाह में तरबियती बैनर लगाए गए।

निकाहों की घोषणाएं

जलसे के अवसर पर, अहबाब किराम (सम्मानित सदस्यों) की यह इच्छा होती है कि क़ादियान की पवित्र बस्ती में उनके बच्चों के निकाहों की घोषणाएं की जाएं।

इसी के अनुसार, जलसे के दूसरे दिन, नमाज़-ए-मग़रिब और इशा के बाद मस्जिद-अक़्सा में निकाहों की घोषणाएं की गईं।

अनुवाद विभाग

चूंकि अचानक हुई बारिश के कारण जलसा गाह से मस्जिद अक़्सा में कार्यक्रम को स्थानांतरित करना पड़ा, इसलिए पहले दिन 27 दिसंबर को केवल तीन भाषाओं – मलयालम, तमिल और बंगाली में अनुवाद किया गया।

दूसरे दिन 28 दिसंबर को चार भाषाओं – मलयालम, तमिल, बंगाली और रूसी में अनुवाद की व्यवस्था की गई।

तीसरे दिन निम्नलिखित 9 भाषाओं में सीधा अनुवाद किया गया: अरबी, रूसी, इंडोनेशियाई, अंग्रेज़ी, मलयालम, तमिल, तेलुगू, बंगाली और कन्नड़।

1250 से अधिक पुरुषों और महिलाओं ने इस अनुवाद सेवा से लाभ उठाया।

जलसे के सभी कार्यक्रमों, विशेष रूप से हज़ूर अनवर (अय्यदाहुल्लाहु ताअला बिनस्रहिल अज़ीज़) के समापन भाषण का अनुवाद इन भाषाओं में किया गया।

महिलाओं ने भी पुरुषों के जलसा गाह के कार्यक्रम को 9 भाषाओं में हो रहे अनुवाद से लाभ उठाया। इस वर्ष, मलयालम, तमिल और बंगाली के अलावा पहली बार रूसी भाषा में भी लाइव स्ट्रीमिंग प्रसारित की गई। अल्हम्दोलिल्लाह! शेष ...

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad